श्रमेण सर्वम् साध्यम्

पथ विकास

14वां अंक मई, 2025

सीमा सड़क संगठन

PATH VIKAS
पथ विकास
13वां अंक मई, 2024
ETING STRATEGIC
IMPERATIVES
&
ECONOMIC
ASPIRATIONS
7TH MAY 2024
IN THE SILENCE
OF
OUR GREAT
MOUNTAINS - WOR
SPEAKS
7TH MAY 2024

ADS ORGANIS

पथ विकास

संपादक मंडल

संरक्षक

ले0 जनरल रघु श्रीनिवासन, पी वी एस एम, वी एस एम
सीमा सड़क महानिदेशक एवं कर्नल कमांडैण्ट
सीमा सड़क संगठन

मुख्य संपादक

ब्रिगेडियर विशाल वर्मा
अध्यक्ष राजभाषा कार्यान्वयन समिति

संपादक

कर्नल जी आर वशिष्ट
राजभाषा अधिकारी

कार्यकारी संपादक

श्री हेमेन्द्र कुमार शर्मा
सहायक निदेशक (राजभाषा)

संयुक्त संपादक

श्री जी डब्ल्यू एक्का, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी
श्री धीर सिंह, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी
श्री हरीश चन्द्र जोशी, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी
श्री मानव शर्मा, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

तकनीकी सहायक

श्री अमृतेश कुमार सिंह, हिंदी टंकक
श्री दीपक कुमार, हिंदी टंकक

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	लेख / कविता	लेखक	पृष्ठ सं.
1.	राजभाषा क्रियान्वयन : सिंहावलोकन		7
2.	हिंदी–दिवस	श्री दीपक	10
3.	क्रोध पर काबू पाने के 5 सफल स्टेप्स	श्री राजीव शर्मा	11
4.	हिंदी भाषा के स्तंभ	श्री आर. एन शुक्ला	12
5.	खुशियों का हिसाब / शक्ति हूँ, सक्षम हूँ, नारी हूँ	ब्रिगेडियर पी सतीश वॉरियर	13
6.	टेलीमेडिसिन : चिकित्सा की बदलती दुनिया	ले. कर्नल मोहन शर्मा	14
7.	बेटी	श्री मिस्तरी एम जी	16
8.	पीले पत्ते और हमारे बुजुर्ग	श्रीमती अपराजिता, पत्नी श्री सुनील कुमार	16
9.	हिंदी हमारी जान	श्री अभय कुमार	16
10.	टीम स्पिरिट है सफलता की कुंजी	श्रीमती कुमुद पंत, धर्मपत्नी मनोज कुमार पंत	17
11.	जांस्कर घाटीः संस्कृति व सुन्दरता	श्री संजय कुमार उजाला	18
12.	रिमझिम वर्षा	श्री अशोक कुमार	19
13.	माँ की ममता	श्री बोध राज	19
14.	पापा प्लीज डू इट अगेन	डॉ. वंदना डी एस (मुंडासे) गौर, धर्मपत्नी श्री धीर सिंह	20
15.	मेरा संगठन – सीमा सड़क संगठन	श्री दीपक कुमार	21
16.	मैं भारत का जवान हूँ	श्रीमती पल्लवी एस. गायकवाड, पत्नी संदीप जी. गायकवाड	22
17.	असफलता – सफलता का पहला कदम	श्रेया कपूर, पुत्री श्री पवन कुमार	22
18.	हिंदी भाषा के विभिन्न आयाम	श्री निरंजन कुमार सिंह	23
19.	आदमी ऑन–लाईन बाजार का ग्राहक या वस्तु	श्री धीर सिंह	25
20.	अटल नारी–एक वीर विधवा की कहानी	श्रीमती शोभा तिवारी	27
21.	आपका जीवन सुंदर होगा	श्री गुडधे सतिश गणपतराव	28
22.	बीसीए पोस्टिंग	श्री देवेन्द्र कुमार कौशिक	29
23.	आज का युग हिंदी भाषा का युग	श्री सपकाले अजय एस	30
24.	दोस्ती	सुश्री स्वाती एस, पुत्री शैलेन्द्र कुमार आर	31
25.	उदय और प्रकाश	श्रीमती सुरभि कुमारी, पत्नी राजीव रंजन पटेल	31
26.	सुनने को महत्व दें, जजमेंटल न बनें	श्री राम निवास कस्वां	32
27.	दुनिया को बदलने में महिलाओं की भूमिका	श्री बोरसे प्रदीप विक्रम	33
28.	आओ हिंदी में काम करें	श्री अजय कुमार	34
29.	देश का जवान	श्रीमती रमिन्द्र	34
30.	नारी और राष्ट्र	श्री कपिल त्यागी	35
31.	हाँ! वो सिपाही है	श्री अरून कुमार	35
32.	एक पेड़ माँ के नाम–प्रकृति को समर्पित मातृ प्रेम	श्री सूर्यवंशी मोतीलाल नारायण	36
33.	मन	श्री अनोज कुमार	37
34.	प्रयत्न	श्री अमन गौड	38
35.	गुंजन	श्री ज्ञान सागर शुक्ल	38
36.	मेहनत और कर्म	श्री धर्मेन्द्र	39
37.	ऐ ग़र्मी	श्री राजीव रंजन पटेल	40
38.	बॉर्डर रोड ऑर्गेनाइजेशन भारत की शान	श्री सुमन कुमार	40
39.	सीमा सड़क संगठन का काम	श्री सुमित कुमार	41
40.	मेरा बी आर ओ महान है	श्री एम.के. पाण्डेय	41
41.	आइए लेह चलें	श्री परवेज़ शाह	42
42.	उच्च ऊँचाई वाले क्षेत्रों में तैनात सीमा सड़क संगठन के कर्मचारी का जीवन एवं कार्य शैली	श्री सतीश कुमार	43
43.	दंतक दिल है हिंदुस्तान का	श्री रमेश चंदर	44
44.	कल हो न हो	श्री धीरेन्द्र कुमार	45
45.	राष्ट्र के विकास में सीमा सड़क संगठन का योगदान	श्री राकेश शर्मा	46
46.	बच्चों की नज़र से		47

लेखों / कविताओं में प्रकट किए गए विचार लेखकों के अपने निजी विचार हैं और उनसे विभाग की सहमति आवश्यक नहीं है।

संपादक

श्री राजेश कुमार सिंह, आई ए एस
रक्षा सचिव
Shri Rajesh Kumar Singh, IAS
Defence Secretary

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
रक्षा मंत्रालय
Government of India
Ministry of Defence

संदेश

1. मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि सीमा सड़क संगठन के स्थापना दिवस के सुअवसर पर राजभाषा हिंदी में प्रकाशित पत्रिका **'पथ विकास'** के 14वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। किसी भी विभाग द्वारा हिंदी पत्रिका का प्रकाशन न केवल राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति उसकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है, बल्कि यह भाषा के प्रति सम्मान और संवेदनशीलता का भी प्रतीक है।

2. किसी राष्ट्र की भाषा, उसकी सांस्कृतिक पहचान और प्रगति का आधार होती है। सीमा सड़क संगठन, एक ओर जहाँ सेना की ऑपरेशनल जरूरतों को पूरा करने एवं सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण सड़कों के निर्माण में अपनी विशिष्ट भूमिका निभा रहा है, वहीं दूसरी ओर राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार हेतु भी निरंतर समर्पित प्रयास कर रहा है। **'पथ विकास'** पत्रिका का प्रकाशन इसी समर्पण का उत्कृष्ट उदाहरण है।

3. यह पत्रिका संगठन के अधिकारियों और कर्मचारियों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति का सशक्त मंच है, जो विचारों के आदान–प्रदान, अनुभवों की साझेदारी और साहित्यिक क्षमता के विकास में सहायक सिद्ध होती है। विशेष रूप से, इससे उन कार्मिकों की जीवनशैली एवं चुनौतियों की झलक मिलती है जो कठिन एवं दूरस्थ क्षेत्रों में कार्यरत हैं। यह भी उल्लेखनीय है कि संगठन राजभाषा अधिनियम एवं नियमों के अनुपालन हेतु पूर्णतः प्रतिबद्ध है।

4. **'पथ विकास'** के 14वें अंक के सफल प्रकाशन हेतु मैं संपादकीय टीम एवं समस्त सहयोगियों को हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ। आशा है कि यह अंक पाठकों के लिए प्रेरणास्पद एवं ज्ञानवर्धक सिद्ध होगा।

शुभकामनाओं सहित,

(राजेश कुमार सिंह)

स्थानः नई दिल्ली
दिनांकः 07 मई 2025

श्रमेण सर्वम् साध्यम्

ले० जनरल रघु श्रीनिवासन, पी वी एस एम, वी एस एम
सीमा सड़क महानिदेशक एवं
कर्नल कमांडैण्ट
सीमा सड़क संगठन

संदेश

1. हम सब के लिए यह गौरव और आनंदित करने वाला विषय है कि सीमा सड़क महानिदेशालय हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी अपने स्थापना दिवस के अवसर पर हिंदी पत्रिका 'पथ विकास' के 14वें अंक का प्रकाशन कर रहा है।

2. हमारी सीमाओं पर वर्तमान परिस्थितियों के प्ररिप्रेक्ष्य में हमारे संगठन की भूमिका और उत्तरदायित्व कई गुना बढ़ गया है। सीमा सड़क संगठन इन सभी नई चुनौतियों का मजबूती से सामना करने और देश के सामरिक एवं राष्ट्र निर्माण कार्य के लिए आधारभूत ढांचे का त्वरित गति से निर्माण करने तथा सीमावर्ती क्षेत्रों में हमारी सेना की रणनीतिक जरूरतों को पूरा करने में पूर्ण रूप से सक्षम है और इस दिशा में बहुत ही महत्वपूर्ण एवं निर्णायक भूमिका निभा रहा है।

3. राजभाषा के रूप में हिंदी का कार्यालय में प्रयोग हेतु सीमा सड़क संगठन सदैव तत्पर है। किसी भी राष्ट्र की भाषा उसकी पहचान होती है और अपनी भाषा में कार्य करना सम्मान की बात होती है। संगठन राजभाषा के प्रचार–प्रसार की दिशा में सराहनीय प्रयास कर रहा है और राजभाषा की प्रगति के लिए अनवरत रूप से प्रयत्नशील है। इन्हीं प्रयासों को मूर्त रूप देने के उद्देश्य से कार्मिकों के लिए हिंदी प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ, पारंगत की कक्षाएं तथा कंप्यूंटर पर हिंदी में काम करने का प्रशिक्षण, हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन नियमित रूप से किया जा रहा है। संगठन द्वारा इस पत्रिका का प्रकाशन हिंदी के प्रयासों में निरंतरता का सूचक है।

4. 'पथ विकास' पत्रिका के इस अंक के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

रघु श्रीनिवासन

स्थानः नई दिल्ली

(रघु श्रीनिवासन)
ले0 जनरल
सीमा सड़क महानिदेशक

दिनांकः 07 मई 2025

श्रमेण सर्वम् साध्यम्

ब्रिगेडियर विशाल वर्मा
अध्यक्ष राजभाषा कार्यान्वयन समिति

मुख्य संपादक की कलम से......

1. राजभाषा के प्रति पूरी तरह से समर्पित हिंदी पत्रिका 'पथ विकास' का 14वां अंक आपके सामने प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार आनंद और संतोष की सुखद अनुभूति हो रही है।

2. हिंदी शुरू से ही अनेक बोलियों, क्षेत्रों, जातियों और धर्मों के लोगों की भाषा रही है। इसका कोई एक सीमित और परिभाषित क्षेत्र नहीं है। जिस प्रकार हिंदी भाषियों की संख्या में दिन–प्रतिदिन बढ़ोत्तरी हो रही है, उसके आधार पर कहा जा सकता है कि आज हिंदी केवल भारत की भाषा न होकर विश्व के बड़े समुदाय की भाषा के रूप में विकसित हो रही है।

3. 'पथ विकास' पत्रिका हिंदी के प्रचार–प्रसार में निर्बाध गति से अग्रसर है, जिसमें उसके सभी लेखकों और पाठकों का महत्वपूर्ण योगदान है। महानिदेशालय का हिंदी अनुभाग सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के प्रति सजग, सचेत तथा जागरूक है। हिंदी भाषा में सुगमता से सरकारी कामकाज न कर पाने वाले और हिंदीतर भाषी कार्मिकों के लिए हिंदी कार्यशालाओं तथा हिंदी कक्षाओं का आयोजन क्रमशः हर तिमाही एवं छमाही आधार पर किया जाता है। पिछले कई सालों में यह पत्रिका संगठन के कार्मिकों व उनके परिवारजनों के विचार गुणवत्ता के साथ व्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम बनी है।

4. 'पथ विकास' पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

विशाल

स्थानः नई दिल्ली

दिनांकः 07 मई 2025

(विशाल वर्मा)
ब्रिगेडियर
अध्यक्ष राजभाषा कार्यान्वयन समिति

श्रमेण सर्वम् साध्यम्

कर्नल जी आर वशिष्ट
राजभाषा अधिकारी

राजभाषा अधिकारी की कलम से.........

1. हम सबके लिए बड़े हर्ष की बात है कि इस वर्ष भी हम सीमा सड़क संगठन की वार्षिक हिंदी पत्रिका 'पथ विकास' के 14वें अंक का प्रकाशन कर रहे हैं।

2. सीमा सड़क संगठन और सभी अधीनस्थ इकाइयां विगत कई वर्षों से राजभाषा हिंदी के प्रयोग को अपने कार्यालयों में बढ़ाने के प्रयास कर रही हैं। हिंदी आज भारत के साथ–साथ विश्व की भी भाषा बनने की ओर अग्रसर है। हम में से अधिकांश लोग अपनी दिनचर्या में हिंदी का भरपूर प्रयोग करते हैं परंतु सरकारी कामकाज हिंदी में करने में झिझकते हैं उसी झिझक को दूर करने के उद्देश्य से हिंदी कक्षाओं और कार्यशालाओं का नियमित आयोजन किया जाता है।

3. हिंदी पत्रिका 'पथ विकास' संगठन में हिंदी को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इस पत्रिका के माध्यम से न केवल रोचक, ज्ञानवर्धक तथा उपयोगी जानकारी के साथ–साथ हिंदी के व्यापक प्रचार–प्रसार को प्रोत्साहन मिल रहा है बल्कि कर्मचारियों को भी अपनी प्रतिभा को लेखनी के माध्यम से उजागर करने का मौका मिल रहा है तथा सहयोग की भावना बढ़ रही है और विचारों का आदान–प्रदान भी हो रहा है।

4. मैं पत्रिका के संपादक मंडल को इसके सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई देता हूं।

गणेश वशिष्ट

(गणेश वशिष्ट)
कर्नल
राजभाषा अधिकारी

स्थान : नई दिल्ली
दिनांक: 07 मई 2025

राजभाषा क्रियान्वयन : सिंहावलोकन

सीमा सड़क महानिदेशालय का हिंदी अनुभाग इस महानिदेशालय व संगठन की अधीनस्थ इकाइयों में सरकारी काम–काज में राजभाषा हिंदी के प्रयोग व राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निहित लक्ष्यों के क्रियान्वयन के प्रति बहुत ही सजग एवं प्रतिबद्ध है। विविध अनुवाद कार्य के अलावा राजभाषा क्रियान्वयन की दिशा में इस अनुभाग द्वारा किए जा रहे कार्यों का संक्षिप्त ब्यौरा इस प्रकार है :–

(क) सरकारी काम–काज में राजभाषा हिंदी का सम्यक प्रयोग व लक्ष्यानुरूप हिंदी पत्राचार करने हेतु कार्मिकों को हिंदी का ज्ञान होना मूल आवश्यकता है। इस महानिदेशालय में गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के सौजन्य से एक पूर्णकालिक प्रशिक्षण केंद्र बनाया गया है जिसमें गृह मंत्रालय के हिंदी प्राध्यापक कार्मिकों को हिंदी प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ व पारंगत का प्रशिक्षण देते हैं। इन पाठ्यक्रमों की परीक्षाएं मई व नवंबर माह में होती हैं। पिछले दो सत्रों में इस महानिदेशालय के 13 कार्मिकों ने प्रशिक्षण प्राप्त कर निम्नांकित विवरणानुसार पुरस्कार प्राप्त किए हैं :–

(अ) जनवरी–मई 2024 सत्र

प्रबोध पाठ्यक्रम

क्र. सं..	संख्या, पदनाम व नाम	प्राप्तांक	प्रोत्साहन राशि
01.	जीएस–178946एन प्र. श्रे. लि. सन्तु छेत्री	70.50%	रू. 1800/–
02.	जीएस–183822एच प्र. श्रे. लि. सारंग संतोष नामदेव	76.00%	रू. 1800/–

पारंगत पाठ्यक्रम

01.	जीएस–199831एन अ. श्रे. लि. विजय कुमार सोनी	66.00%	रू. 7,000/–
02.	जीएस–195890एच कनि. अभि. राकेश कुमार गौतम	62.00%	रू. 7,000/–
03.	जीसी–313783एफ नायब सुबेदार जोगिंद्र	56.00%	रू. 4,000/–
04.	जीएस–193918वाई अ. श्रे. लि. अरविंद कुमार सिंह	58.50%	रू. 4,000/–

(ब) जुलाई–नवंबर 2024 सत्र

पारंगत पाठ्यक्रम

01.	जीएस–188520ए कार्यालय अधीक्षक नूतन किशोर	70.00%	रू. 10,000/–
02.	जीएस–200402एफ अ.श्रे.लि. अविनाश सिंह	73.00%	रू. 10,000/–
03.	जीएस–200256एम अ.श्रे.लि. सौरभ श्रीवास्तव	74.00%	रू. 10,000/–
04.	जीएस–177328डब्ल्यू प्र.श्रे.लि. रामबृज	65.00%	रू. 7,000/–
05.	जीएस–184862डब्ल्यू वरि.भं.पर्य. अनिल कुमार मिश्रा	60.00%	रू. 7,000/–
06.	जीएस–199764एन अ.श्रे.लि. आशीष दलाल	62.00%	रू. 7,000/–
07.	जीएस–187853ए अ.श्रे.लि. सुधीर कुमार	59.50%	रू. 4,000/–

(ख) कार्मिकों को हिंदी में काम करने और सक्षम बनाने तथा उनके हिंदी ज्ञान का परिमार्जन करने के उद्देश्य से प्रत्येक तिमाही में हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया जाता है, जिसमें प्रत्येक निदेशालय से कार्मिक भाग लेते हैं। इस कार्यशाला में कार्मिकों को दिन–प्रतिदिन का सरकारी काम–काज हिंदी में करने का प्रशिक्षण देकर उसका अभ्यास

कराया जाता है। गृह मंत्रालय से भी इस कार्यशाला हेतु वक्ता आमंत्रित किए जाते हैं जो कंप्यूटर पर हिंदी में सुगमता से कार्य करने का प्रशिक्षण देते हैं। इसके अलावा कार्यशाला में सरकार द्वारा चलाई जा रहीं विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं की जानकारी भी दी जाती है जिससे अधिकाधिक कार्मिक इन योजनाओं में भाग लेकर लाभान्वित हो सकें।

(ग) सरकार द्वारा चलाई जा रही सभी प्रोत्साहन योजनाओं को इस मुख्यालय में लागू किया गया है। प्रशिक्षणोपरांत मिलने वाले पुरस्कारों के अलावा वित्त वर्ष के दौरान हिंदी में सर्वाधिक काम करने वाले कार्मिकों को उनके द्वारा किए गए कार्य के आधार पर निर्णायक मंडल द्वारा पुरस्कार के लिए अनुमोदित किया जाता है, जिन्हें हिंदी दिवस के अवसर पर पुरस्कार दिए जाते हैं। वित्त वर्ष 2023–24 के दौरान पुरस्कार पाने वाले कार्मिकों का ब्यौरा निम्नलिखित है :–

क्र. सं.	संख्या, पदनाम व नाम	निदेशालय	पुरस्कार राशि	परिणाम
01.	जीएस–185370के प्र. श्रे. लिपिक रबिन्द्र नाथ सिंह	समन्वय ईपीसी एवं संविदा निदेशालय	रू. 5000/–	प्रथम
02.	जीएस–186762के अ. श्रे. लिपिक रामबह्म गुरिजेपल्ली	आई आर एल ए	रू. 5000/–	प्रथम
03.	जीएस–185433एफ प्र. श्रे. लिपिक परशुराम सिंह	ई3ईएस/तकनीकी प्रशासन निदेशालय	रू. 3000/–	द्वितीय
04.	जीएस–178946एन प्र. श्रे. लिपिक संतु छेत्री	शिकायत प्रकोष्ठ/ई1सी	रू. 3000/–	द्वितीय
05.	जीएस–194105पी अ. श्रे. लिपिक प्रमोद कुमार पटेल	सीसम/समन्वय ई	रू. 3000/–	द्वितीय
06.	जीएस–178323 के प्र. श्रे. लिपिक सतीश कुमार	सीसम/समन्वय ई	रू. 2000/–	तृतीय
07.	जीएस–186703एक्स प्र. श्रे. लिपिक सुजीत कुमार	पश्चिम निदेशालय	रू. 2000/–	तृतीय
08.	जीएस–189696 अ. श्रे. लिपिक अमित कुमार ठाकुर	ई3 क्यू तकनीकी प्रशासन	रू. 2000/–	तृतीय
09.	जीएस–179541पी प्र. श्रे. लिपिक अशोक ठाकुर	ई1बी अनुभाग/ कार्मिक निदेशालय	रू. 2000/–	तृतीय
10.	जीएस–193994एल अ. श्रे. लिपिक मुकेश कुमार	आई आर एल ए	रू. 2000/–	तृतीय

(घ) दिनांक 14 सितंबर 2024 से 30 सितंबर 2024 तक महानिदेशालय में हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा धूमधाम से मनाया गया। माननीय गृहमंत्री जी की अध्यक्षता में उद्‌घाटन समारोह एकीकृत रूप से नई दिल्ली के 'भारत मंडपम' में आयोजित किया गया। पखवाड़े के दौरान मुख्यालय परिसर में बैनर, प्रेरक पोस्टर आदि लगाए गए। हिंदी कार्यशाला में कार्मिकों को हिंदी में प्रशिक्षण देने के अलावा हिंदी भाषी एवं हिंदीतर भाषी कार्मिकों हेतु हिंदी की कई प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं जिनमें काफी संख्या में कार्मिकों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया। इन प्रतियोगिताओं के संचालन व मूल्यांकन हेतु अधिकारियों के बोर्ड का गठन किया गया। जिन कर्मचारियों को बोर्ड द्वारा पुरस्कार हेतु चुना गया उनका ब्यौरा इस प्रकार है :–

हिंदी निबंध प्रतियोगिता (हिंदी भाषी)

क्र. सं.	संख्या, पदनाम व नाम	निदेशालय/इकाई	पुरस्कार राशि
01.	जीएस–186889एम कनि. अभि. (सि.) राजीव कुमार	अनु. एवं सतर्कता निदेशालय	रू. 1500/–
02.	जीएस–194285एच अवर श्रेणी लिपिक, बिजेंद्र कुमार	1353 जीई	रू. 1200/–
03.	जीएस–196487एच प्रवर श्रेणी लिपिक नेहा सिंह	ब्रोवा	रू. 1000/–
04.	जीएस–200356एक्स– अवर श्रेणी लिपिक शुभम यादव	तकनीकी योजना समन्वय	रू. 500/–

हिंदी नोटिंग एवं ड्राफ्टिंग प्रतियोगिता (हिंदी भाषी)

01.	जीएस–185575वाई कनिष्ठ अभियंता (सि.) सुधांशु सक्सेना	पश्चिम निदेशालय	रू. 1500/–
02.	जीएस–187004वाई प्रवर श्रेणी लिपिक सुशील कुमार	ई1 बी	रू. 1200/–
03.	जीएस–181880एन अवर श्रेणी लिपिक कैलाश चंद मीणा	अनु. एवं सतर्कता निदेशालय	रू. 1000/–
04.	जीएस–173413एफ मैसन सुरेश राम	1353 जीई	रू. 500/–

हिंदी भाषण प्रतियोगिता (हिंदी भाषी)

01.	जीएस–197842एफ कनिष्ठ अभियंता(सि.) चंद्र प्रकाश रतन	आरबैट	रू. 1500/–
02.	जीएस–184862डब्ल्यू वरि.भं.पर्य. अनिल कुमार मिश्रा	ई4 मरम्मत	रू. 1200/–
03.	जीएस–200256एम अवर श्रेणी लिपिक सौरभ श्रीवास्तव	पश्चिम निदेशालय	रू. 1000/–
04.	जीएस–178047एम मार्गदर्शक मनोज कुमार पांडेय	प्रशासनिक अनुभाग	रू. 500/–

हिंदी टंकण प्रतियोगिता

01.	जीएस–200402एफ अवर श्रेणी लिपिक अविनाश सिंह	ई1डी	रू. 1500/–
02.	जीएस–194068एम प्रवर श्रेणी लिपिक महेन्द्र सिंह यादव	कार्मिक समन्वय	रू. 1200/–
03.	जीएस–186703एक्स– प्रवर श्रेणी लिपिक सुजीत कुमार	पश्चिम निदेशालय	रू. 1000/–
04.	जीएस–183513ए प्रवर श्रेणी लिपिक अजय चौधरी	ई1ए	रू. 500/–

हिंदी निबंध प्रतियोगिता (हिंदीतर भाषी)

01.	जीएस–189829एच अवर श्रेणी लिपिक अरीजीत देब रॉय	टी एण्ड सी/ कार्मिक समन्वय	रू. 1500/–
02.	जीएस–194209डब्ल्यू प्र. श्रेणी लिपिक शिंदे कमलाकर राजेंद्र	समन्वय सी	रू. 1200/–
03.	जीएस–189737डब्ल्यू मार्गदर्शक इन्द्र बहादुर छेत्री	प्रशासनिक अनुभाग	रू. 1000/–

हिंदी नोटिंग एवं ड्राफ्टिंग प्रतियोगिता (हिंदीतर भाषी)

क्र. सं.	संख्या, पदनाम व नाम	निदेशालय/इकाई	पुरस्कार राशि
01.	जीएस–186153ए प्र. श्रेणी लिपिक चित्ते सच्चिदानंद दत्तात्रय	ई3ईएस	रू. 1500/–
02.	जीएस–193650एम अवर श्रेणी लिपिक संदिप किसन थोलबरे	ई1ए/कार्मिक समन्वय	रू. 1200/–
03.	जीएस–178946एन प्रवर श्रेणी लिपिक सन्तु छेत्री	ई1सी/कार्मिक समन्वय	रू. 1000/–
04.	जीएस–192260एक्स प्रवर श्रेणी लिपिक पाटील निलेश रविंद्र	तकनीकी योजना समन्वय	रू. 500/–

हिंदी भाषण प्रतियोगिता (हिंदीतर भाषी)

01.	जीएस–188177एच अवर श्रेणी लिपिक सी एच एन रत्नम्	ब्रोवा	रू. 1500/–
02.	जीएस–196378डब्ल्यू कनिष्ठ अभि. (वि.यां.) पारसे कपिल बी	ई4 मरम्मत	रू. 1200/–

(च) महानिदेशालय में प्रत्येक तिमाही में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक की जाती है जिसमे पिछली तिमाही के दौरान विभिन्न निदेशालयों द्वारा हिंदी में किए गए कार्य की समीक्षा के साथ–साथ सरकारी काम–काज में हिंदी के प्रयोग में उत्तरोत्तर वृद्धि सुनिश्चित करने तथा इस कार्य में आने वाली रूकावटों व उनके व्यावहारिक समाधान पर चर्चा की जाती है।

(छ) यह मुख्यालय, उत्तरी दिल्ली नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति का एक सक्रिय सदस्य है तथा उसकी हर गतिविधि में भागीदारी सुनिश्चित करता है।

(ज) रक्षा मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित सभी बैठकों में भाग लेकर बैठक में लिए गए निर्णयों पर प्राथमिकता के तौर पर अनुवर्ती कार्रवाई की जाती है।

(झ) संसदीय राजभाषा समिति द्वारा समय–समय पर इस मुख्यालय व इसकी अधीनस्थ इकाइयों का निरीक्षण किया जाता है।

इसके अलावा महानिदेशालय के हिंदी अनुभाग द्वारा अपर महानिदेशक मुख्यालयों, परियोजना मुख्यालयों व स्वतंत्र इकाइयों से प्राप्त तिमाही/अर्धवार्षिक रिपोर्ट, बैठक के कार्यवृत्त आदि की समीक्षा कर उन्हें यथावश्यक सुझाव दिए जाते हैं।

हिंदी–दिवस

आओ सब मिलकर के हिंदी दिवस मनायें हम..
भारत के कोने कोने में हिंदी को पहुँचायें हम..
हिंदी के आँचल में बांधे भारत की हर भाषा को..
जन–जन को हिंदी भाषा का अक्षर ज्ञान करायें हम..

पूरब से पश्चिम तक हिंदी उत्तर से दक्षिण तक हिंदी..
चहूँ दिशा हो हिंदी–हिंदी ऐसी अलख जगायें हम..
हर तन की बस जान हो हिंदी हर दिल का अरमान हो हिंदी.
हर जन का सम्मान हो हिंदी अब नव–गीत ये गायें हम.
भारत के कोने कोने में हिंदी को पहुँचायें हम..

☆☆☆☆

श्री दीपक, कार्यालय अधीक्षक, ग्रेफ अभिलेख, पुणे–15

सबसे बड़ी उदारता है अनुदार के प्रति उदार होना।

क्रोध पर काबू पाने के 5 सफल स्टेप्स

हम सभी सुबह से लेकर रात तक ऐसा जीवन जी रहे हैं, जहां हमें ऐसी परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है जहां गुस्सा करने की एक आम और सबसे आसान प्रतिक्रिया को चुनते हैं। एक बार एक डॉक्टर अपने क्लिनिक में एक मरीज से मिलता है और पूछता है, "तुम एक दिन में कितनी बार गुस्सा करती हो?'' मरीज़ ने जवाब दिया कि "मैंने कभी गिनती नहीं की, लेकिन मुझे लगता है कि एक भी दिन ऐसा नहीं होता होगा कि जब मैं गुस्सा न होऊं, अपना आपा न खोऊं, मैं अपने पति, बच्चों, नौकरानी यहां तक कि दुकानदार पर भी गुस्सा हो जाती हूँ।" डॉक्टर ने कहा कि क्या आपने कभी सोचा है कि गुस्सा करने पर या ऐसी भावना के बाद आपके अंदर नकारात्मक केमिकल श्रवित होते हैं जो शरीर के अंदर मौजूद हार्मोन्स को लगातार नुकसान पहुंचाते हैं। गंभीर मानसिक और शारीरिक बीमारियाँ या नकारात्मक मन के कारण होने वाली बीमारियाँ जैसे कि रक्तचाप, मधुमेह, अवसाद, अनिद्रा और यहाँ तक कि शरीर में कैंसर भी इसके कारण हो सकता है। घृणा, प्रतिशोध, आक्रामकता या किसी भी अन्य विषैले और नकारात्मक व्यवहार के सबसे छोटे रिएक्शन भी हमारे मन की शांति, प्रेम और खुशी के सकारात्मक मूड को कई घंटों तक कम कर देते हैं। आइए, मैं आपको क्रोध पर काबू पाने के लिए 5 स्टेप्स बताता हूँ:–

1. **जिसे आप नहीं बदल सकते उसे बदलने की कोशिश न करें** – अक्सर हम अपने जीवन में उन परिस्थितियों, घटनाओं को बदलने की कोशिश करते हैं, जो हमारे नियंत्रण से परे हैं। जीवन की घटनाएं जिनमें विभिन्न परिस्थितियाँ और लोगों का व्यवहार शामिल है, जो हमारी इच्छा के अनुरूप नहीं हुए हैं, हमें नकारात्मक और क्रोध भरी भावनाओं के साथ प्रतिक्रिया करने पर मजबूर करते हैं। जब हम किसी घटना को बदल नहीं सकते तो हम निराश महसूस करते हैं और सोचते हैं कि चीजें हमारे नियंत्रण से बाहर हैं। उस समय स्वयं को याद दिलाएं कि जीवन में सब कुछ हमेशा हमारी इच्छाओं के अनुसार नहीं हो सकता। साथ ही जितना अधिक हम अपने अंदर सकारात्मक बदलाव लाएंगे, उतना ही हमारे परिवर्तन की ऊर्जा हमारे आस–पास के दृश्यों को सकारात्मक तरीके से बदल देगी। इसलिए, यह चाहने के बजाय कि किसी व्यक्ति विशेष में कोई विशेष गुण हो या अधिक सकारात्मकता हो, खुद को उस गुण या सकारात्मकता से भरें और रेडिएट करें। इस तरह आप उन्हें स्वीकार करने लगेंगे और उनसे उम्मीद नहीं करेंगे, क्योंकि उम्मीदें; क्रोध भरी भावनाओं का बीज हैं।

2. **मैं शांति और प्रेम का अनंत श्रोत हूं, इसे हमेशा याद रखें** – हम सभी शांति और प्रेम के सुंदर श्रोत हैं, जिसे हम हर समय अनुभव कर सकते हैं और दूसरों के साथ साझा कर सकते हैं। साथ ही, जहां शांति और प्रेम होता है, वहां विभिन्न प्रकार के लोगों और परिस्थितियों को सहन करने की शक्ति हमारे अंदर होती है, जिससे हिंसक प्रतिक्रिया करने के बजाय, शांत और धैर्यवान बने रहने में आसानी होती है। किसी से नफरत करना और किसी के पीठ पीछे या सामने, उसके खिलाफ बोलना, ये सब उस मधुर शांति और प्रेम की कमी का प्रतिबिंब है जिससे हम अनंत काल से भरे हुए हैं, लेकिन हम इसे भूल जाते हैं। अपने दिन की शुरुआत इन विचारों के साथ करें कि मैं प्रकाशमय ऊर्जा हूँ, शांति और प्रेम से भरपूर हूँ। मैं मस्तक के बीच चमकते हुए सितारे के रूप में अपने रूहानी स्वरूप को देखता हूँ। मैं मिठास की रोशनी को दुनिया में प्रसारित करता हूं। इसे एक दिन में कई बार दोहराएं और आप देखेंगे कि धीरे–धीरे क्रोधपूर्ण और हिंसक प्रतिक्रियाएं पैदा करने वाला व्यक्तित्व, लोगों और स्थितियों के प्रति अधिक मधुर और विनम्र प्रतिक्रियाओं में बदलने लगेगा।

3. **माफ करो और भूल जाओ** – क्या कभी आपने पूरा दिन किसी दूसरे व्यक्ति के नकारात्मक कार्यों के बारे में सोचने और उन्हें अपने मन के अनुसार अलग–अलग रूप देने में बिताया है, जो न केवल नकारात्मक हैं बल्कि आपको आंतरिक रूप से चोट पहुंचाते हैं। आपके दिल में भरी हुई ऐसी

कर्म करने में ही तुम्हारा अधिकार है, फल में नहीं।

ठेस भरी भावनाएं कदम–कदम पर गुस्से का कारण बन सकती हैं और आपके मन को हिंसक बना सकती हैं। इस प्रकार का गुस्सा अलग–अलग स्थितियों में फूट सकता है जिसमें आप और अन्य लोग शामिल हो सकते हैं और जरूरी नहीं कि गुस्से का कारण वही व्यक्ति हो। क्षमा करने और भूलने के लिए भावनात्मक शक्ति की आवश्यकता होती है। प्रेम से उत्तर देना और क्रोध से प्रतिक्रिया न करना ही कर्म द्वारा क्षमा करना है। क्षमा करने का अर्थ बिना शर्त प्यार करना है। भूलना अर्थात् स्वयं का कल्याण करना है, क्योंकि न भूलने के कारण चित्त में चलने वाले विचार मन, शरीर और रिश्तों को अत्यधिक नुकसान पहुंचाते हैं। जब आप क्षमा करेंगे, तभी आप भूल सकेंगे। क्षमा करने के लिए याद रखें कि हर किसी का मूल व्यक्तित्व मधुरता, शांति और प्रेम है और किसी की नकारात्मक टिप्पणी या कड़वाहट से भरपूर कर्म, उनके द्वारा अर्जित नकारात्मक संस्कारों का परिणाम हैं, जो अस्थायी हैं और जिन्हें वह व्यक्ति दूर करने का प्रयास कर रहा है।

4. ''मैं ही सही हूं'', की भावना को छोड़ें – गुस्से से भरे रिश्तों का सबसे महत्वपूर्ण कारण यह अहंकार है कि मैं ही सही हूं और दूसरा व्यक्ति गलत है। जितना अधिक अहंकार, उतना अधिक क्रोध। अक्सर जो लोग परिवार में या कार्यस्थल पर बहुत मूडी होते हैं और हमेशा दूसरे लोगों पर चिल्लाते रहते हैं और उन्हें गलत समझते हैं, वे बहुत अहंकारी होते हैं। इसके अलावा, क्रोध का एक बहुत ही सामान्य और नकारात्मक रूप है व्यंग्य; लोगों के कार्यों पर व्यंग्यात्मक टिप्पणी करना और हमेशा यह सोचना कि मैं जो सोचता हूं, करता हूं वह सबसे अच्छा और सही है। दूसरी ओर, जो व्यक्ति अपने अहंकार का त्याग करता है, वह बातचीत में बहुत मधुर और दयालु होगा, भले ही दूसरे व्यक्ति ने वास्तव में कुछ गलतियाँ की हों। दूसरों को निर्दोष समझने और अत्यधिक आलोचनात्मक न होने के लिए एक बहुत ही सरल अभ्यास यह है कि हम प्रतिदिन मिलने वाले प्रत्येक व्यक्ति में कम से कम एक विशेषता देखें। इस प्रकार की सकारात्मक दृष्टि हमें क्रोध से मुक्त करती है और फिर हम नकारात्मक परिस्थितियों में भी लोगों को सकारात्मक रूप से देखते हैं और उनके दोषों और कमजोरियों पर ध्यान केंद्रित नहीं करते हैं।

5. क्रोध मुक्त बनने के लिए तनाव मुक्त रहें– हमारा जीवन अलग–अलग प्रकार की कई नकारात्मक स्थितियों और मोड़ों से भरा हुआ है, जो हमें कभी–कभी अस्थिर और तनावग्रस्त रखती हैं। तनाव मुख्य रूप से बहुत सारे क्यों, क्या, कब और कैसे के कारण होता है। जितना अधिक मन प्रश्नों और अनसुलझी समस्याओं से भरा होगा, उतना ही अधिक मन विषाक्त बोल और व्यवहार द्वारा प्रतिक्रिया करेगा। समस्याएँ हमेशा मौजूद रहेंगी लेकिन उनके प्रति हमारा दृष्टिकोण और सही समय पर और सही तरीके से उनके हल होने की प्रतीक्षा में अधीरता ही क्रोध को जन्म देती है। कई मामलों में गुस्सा बोतल बंद तनाव का ही एक रूप है, जो समय–समय पर फूटकर सामने आता है। योग के अभ्यास के परिणामस्वरूप पैदा हुई सकारात्मक सोच, मन के तनाव को हल करने की सामान्य तकनीक है। क्रोध से मुक्ति के बाद ही तनाव से मुक्ति मिलती है।

✯✯✯✯

श्री राजीव शर्मा, वी एस एम,
मुख्य अभियंता, उदयक परियोजना

हिंदी भाषा के स्तंभ

वर्णमाला हिंदी की, वैज्ञानिक मनभावन।
13 स्वर, 39 व्यंजन, 'अक्षर' इसमें बावन।।

कोई भी हो नाम अगर तो, संज्ञा वह कहाए।
संज्ञा के बदले जो आता, सर्वनाम बन जाए।।

कोई भी हो काम अगर तो, क्रिया उसे हम कहते हैं।
जिनका रूप कभी न बदले, अव्यय शब्द वह होते है।।

पुरूष जाति का बोध कराते, शब्द कहते हैं 'पुल्लिंग'।
स्त्री जाति का बोध कराते, शब्द वहीं हैं 'स्त्रीलिंग।।

संख्या में हो एक अकेला, होता 'एकवचन'।
अगर एक से ज्यादा हो तो, बनता 'बहुवचन'।।

उत्तम मैं हूँ, मध्यम तुम हो तीसरा होता अन्य।
जिन शब्दों का अर्थ एक सा, पर्यायवाची शब्द।।

एक दूसरे से जो उल्टे, होते विलोम शब्द।।

✯✯✯✯

श्री आर. एन शुक्ला, सहा. निदेशक, (राजभाषा)
ग्रेफ केन्द्र पुणे–15

मनुष्य के संपूर्ण कार्य उसकी इच्छा के प्रतिबिंब होते हैं।

'खुशियों का हिसाब'

दोस्तों के साथ
छुट्टी मनाने का आया मौक़ा
भर लिए सूटकेस में खूबसूरत कपड़े
बस कोई नक़ाब नहीं रखा।

कुछ इंतज़ाम उसने किए
और कुछ बंदोबस्त हमने कर लिया
सबसे बेहतर होने का
ऐसा कोई खिताब नहीं रखा।

कई नज़ारे देखे
खुशियों का खज़ाना हाथ आया
जितना भी मिला बाँट लिया
बस कोई हिसाब नहीं रखा।

हर चीज़ खत्म हो जाती है
अच्छे दिन शायद, कुछ और भी जल्दी
फिर मिलेंगे, ये जानते हैं
इसलिए अलविदा कहने का रिवाज़ नहीं रखा।

'शक्ति हूँ, सक्षम हूँ, नारी हूँ'

मैं कौन हूँ
जानती हूँ
किसी नाम से सीमित नहीं
क्या चाहती हूँ
जानती हूँ
किसी सहारे की ज़रूरत नहीं
किसकी तलाश है
जानती हूँ
मैं अपने आप में पूरी हूँ, ये मानती हूँ
देवी हूँ, पूजा होती है मेरी
ये जानती हूँ
फिर भी बस नारी रहना चाहती हूँ
मेरी फ़िक्र है तुम्हें
मैं जानती हूँ
पर अपना ख्याल खुद रखना जानती हूँ
शक्ति हूँ
सक्षम हूँ
नारी हूँ
अपने आप को पहचानती हूँ

☆☆☆☆

ब्रिगेडियर पी सतीश वॉरियर, उप महानिदेशक पश्चिम निदेशालय, सी.स.म.

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा–ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।।

– भारतेंदु हरिश्चंद्र

परोपकार से बड़ा पुण्य कोई नहीं।

टेलीमेडिसिन : चिकित्सा की बदलती दुनिया

टेलीमेडिसिन स्वास्थ्य सेवा की एक आधुनिक विधा है जो दूरस्थ रोगियों को चिकित्सा सेवाएँ प्रदान करने के लिए दूरसंचार तकनीकों का उपयोग करता है। इससे डिजिटल संचार उपकरणों का प्रयोग करते हुए रोगियों को शारीरिक संपर्क की आवश्यकता के बिना चिकित्सा निदान, परामर्श और उपचार प्रदान किया जाता है। टेलीमेडिसिन कई दशकों से मौजूद है, लेकिन हाल के वर्षों में खासकर हाल ही में कोविड–19 महामारी के दौरान इसने महत्वपूर्ण गति प्राप्त की है।

टेलीमेडिसिन विधा स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं को उन रोगियों तक पहुँचने में सक्षम बनाती है जो दूर–दराज़ के क्षेत्रों में रहते हैं या जिन्हें यातायात या परिवहन समस्याओं के कारण स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँचने में कठिनाई होती है। रोगियों के लिए यह स्वास्थ्य सेवा प्राप्त करने का एक सुविधाजनक और किफायती तरीका भी साबित हुआ है, क्योंकि इसके द्वारा वे अपने घरों में आराम से चिकित्सा की सुविधा प्राप्त कर सकते हैं। इस लेख में, हम टेलीमेडिसिन के विभिन्न प्रकारों, इसके लाभों और इसमें आने वाली कुछ चुनौतियों पर चर्चा करेंगे। हाल ही में टेलीमेडिसिन में व्यापक रूप से इंटरनेट पर डेटा साझा करने से लेकर सबसे छोटे रूप में उपयोगिता में उछाल आया है जिसमें स्वास्थ्य प्रदाताओं और रोगी दोनों के बीच आंकड़े या रिपोर्ट पर एक सहज व्हाट्सएप संदेश द्वारा चर्चा की जा रही है।

1. **टेलीमेडिसिन के प्रकारः** टेलीमेडिसिन में कई तरह की तकनीकें और सेवाएँ शामिल हैं जिनका इस्तेमाल दूर से ही चिकित्सा सेवा प्रदान करने के लिए किया जा सकता है। टेलीमेडिसिन के बहुत से आयाम हैं, जो इस प्रकार हैः–

(क) **सजीव वीडियो टेलीमेडिसिनः** इसमें रोगी और स्वास्थ्य सेवा प्रदाता के बीच वास्तविक समय का वीडियो संचार शामिल है। स्वास्थ्य सेवा प्रदाता रोगी से परामर्श करने, उनके लक्षणों की समीक्षा करने और निदान या उपचार योजना प्रदान करने के लिए वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग टूल का उपयोग कर सकता है। इस प्रकार की टेलीमेडिसिन मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं के लिए विशेष रूप से उपयोगी है, क्योंकि यह रोगियों को अपने घरों में आराम से परामर्श और चिकित्सा की सुविधा प्राप्त करने की सहूलियत देता है।

(ख) **स्टोर–एंड–फॉरवर्ड टेलीमेडिसिनः** इसमें स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं के बीच चिकित्सा आंकड़े और छवियों को साझा करना शामिल है। उदाहरण के लिए, एक रेडियोलॉजिस्ट दूर से चिकित्सा छवियों की समीक्षा और व्याख्या कर सकता है और परिणाम रोगी के प्राथमिक देखभाल चिकित्सक को भेज सकता है। इस प्रकार की टेलीमेडिसिन विभिन्न स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं और विशेषज्ञों के बीच चिकित्सा डेटा साझा करने के लिए उपयोगी है।

(ग) **दूरस्थ रोगी परिचर्चाः** इसमें रोगी के विशेष लक्षणों और स्वास्थ्य मापदण्डों को दूर से ट्रैक करने के लिए सेंसर और देखभाल उपकरणों का उपयोग शामिल हैं। एकत्र किए गए आंकडों को स्वास्थ्य सेवा प्रदाता को प्रेषित किया जा सकता है जो इसका उपयोग रोगी के स्वास्थ्य की निगरानी करने और उनकी स्थिति में किसी भी बदलाव का पता लगाने के लिए कर सकता है।

2. **टेलीमेडिसिन के लाभः** टेलीमेडिसिन स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं और रोगियों, दोनों को कई लाभ प्रदान करती है। यहाँ कुछ लाभ दिए गए हैं :–

(क) **स्वास्थ्य सेवा तक बेहतर पहुंचः** टेलीमेडिसिन स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं को उन रोगियों तक पहुँचने में सक्षम बनाती है जो दूर–दराज के क्षेत्रों में रहते हैं या जिन्हें आवागमन, परिवहन या किसी अन्य समस्या के कारण स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँचने में कठिनाई होती है। इससे स्वास्थ्य संबंधी विषमताओं को कम करने में मदद मिलती है और यह सुनिश्चित होता है कि हर कोई अपने दुर्गम स्थान की परवाह

किए बिना स्वास्थ्य सेवाएँ प्राप्त कर सकता है।

(ख) **सुविधाः** टेलीमेडिसिन विधा मरीजों के लिए स्वास्थ्य सेवा प्राप्त करने का एक सुविधाजनक तरीका है, क्योंकि वे अपने घर बैठे ही नियमित और आपातकालीन चिकित्सा देखभाल प्राप्त कर सकते हैं। इससे स्वास्थ्य सेवा केंद्र तक जाने, जो समय लेने वाला, महंगा और कई बार स्वास्थ्य के लिए प्रतिकूल हो सकता है, की जरूरत ही नहीं होती है।

(ग) **किफायतीः** टेलीमेडिसिन मरीजों के लिए स्वास्थ्य सेवा प्राप्त करने का एक किफ़ायती तरीका है, क्योंकि इसमें रोगी को व्यक्तिगत रूप से मिलने की ज़रूरत नहीं पड़ती, जो कि महंगा हो सकता है। इससे अस्पताल में भर्ती होने की ज़रूरत भी कम हो जाती है, जो कि महंगा हो सकता है।

(घ) **बेहतर स्वास्थ्य परिणामः** टेलीमेडिसिन से रोगियों को समय पर चिकित्सा देखभाल उपलब्ध कराकर स्वास्थ्य परिणामों में सुधार आ सकता है। इससे पुरानी बीमारियों को बढ़ने से रोकने और अस्पताल में भर्ती होने की संभावना को कम करने में मदद मिल सकती है।

(च) **रोगी की सहभागिता में वृद्धिः** टेलीमेडिसिन मरीजों को उनकी स्वास्थ्य सेवा पर अधिक नियंत्रण प्रदान करके रोगी की सहभागिता बढ़ा सकती है। मरीज अपने मेडिकल रिकॉर्ड तक पहुँच सकते हैं, अपने स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं से संवाद कर सकते हैं और अपने स्वास्थ्य सुधार की स्थिति को कहीं से भी ट्रैक कर सकते हैं।

(छ) **दुनियॉ की नवीनतम तकनीकी का प्रशिक्षणः** दुनिया भर में प्रशिक्षण उपकरणों और बुनियादी ढांचे की लागत बढ़ रही है तथा सभी के लिए संपूर्ण पैकेज उपलब्ध कराना असंभव है। उचित उपकरणों की अनुपलब्धता के कारण होने वाली कमी को इस क्षेत्र में टेलीमेडिसिन का उपयोग करके पूरा किया जा सकता है।

3. टेलीमेडिसिन की चुनौतियाँः टेलीमेडिसिन के कई लाभ हैं, लेकिन इसके साथ कुछ चुनौतियाँ भी जुड़ी हैं जो इस प्रकार हैंः—

(क) **प्रौद्योगिकी कठिनाइयॉः** टेलीमेडिसिन के लिए विश्वसनीय और सुरक्षित प्रौद्योगिकी अवसंरचना की आवश्यकता होती है, जो कुछ स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं के लिए एक चुनौती हो सकती है। टेलीमेडिसिन सेवाओं को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए उनके पास आवश्यक उपकरण और सॉफ़्टवेयर की कमी हो सकती है।

(ख) **गोपनीयता और सुरक्षा संबंधी चिंताएंः** टेलीमेडिसिन में डिजिटल नेटवर्क पर संवेदनशील चिकित्सा डेटा का प्रसारण शामिल है, जिससे गोपनीयता एवं सुरक्षा संबंधी चिंताएँ पैदा होती हैं। स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि मरीज़ का डेटा अनधिकृत पहुँच और उल्लंघनों से सुरक्षित रहे।

(ग) **वास्तविक चिकित्सा देखभाल का कोई विकल्प नहींः** हाल के वर्षों में टेलीमेडिसिन की चिकित्सा देखभाल की पहुंच में काफी वृद्धि हुई है, लेकिन यह अस्पतालों या चिकित्सा देखभाल केंद्रों में उपलब्ध चिकित्सा सुविधा का वास्तविक विकल्प नहीं हो सकती। टेलीमेडिसिन की पहुँच की सीमा अंतिम उपभोक्ता तक सेवा की प्रत्यक्ष डिलीवरी में परिलक्षित होती है।

(घ) **जनशक्ति के प्रशिक्षण में बाधाः** टेलीमेडिसिन, हालांकि अंतिम उपभोक्ता को विज्ञान और प्रौद्योगिकी में नवीनतम जानकारी प्रदान करता है, लेकिन इसका उपयोग जनशक्ति के प्रशिक्षण या शल्य चिकित्सा या अन्य त्वरित उपचार प्रक्रिया में सहायता के लिए नहीं किया जा सकता है। टेलीमेडिसिन चाहे कितनी भी नई क्यों न हो, तकनीकी जनशक्ति के "व्यावहारिक" प्रशिक्षण का विकल्प नहीं हो सकती है।

टेलीमेडिसिन — एक वरदान या एक बुराई, एक नया क्षितिज या एक शॉर्टकट, यह अभी भी देखा जाना बाकी है क्योंकि यह अभी और भी उलझता जा रहा है, लेकिन जब तक बहस सुलझ नहीं जाती, यह एक उपयुक्त विकल्प और "आगे बढ़ने का एक रास्ता" है।

☆☆☆☆

ले. कर्नल मोहन शर्मा, संयुक्त निदेशक, चिकित्सा निदेशालय

जननी का हृदय शिशु की पाठशाला है।

बेटी

बेटी बनकर आई हूँ माँ–बाप के जीवन में,
बसेरा होगा मेरा कल किसी और आँगन में।
क्यों यह रीत रब ने बनाई होगी,
कहते हैं आज नहीं तो कल बेटियां पराई होंगी।
पाल पोस कर जिन हाथों से हमें बड़ा किया,
आया समय तो उन्हीं हाथों से विदा किया।
टूट कर बिखर जाती है जिन्दगी यों कहीं,
नए रिश्ते में प्यार मिले जरुरी तो नहीं।
क्यों यह रिश्ता हमारा इतना अजीब होता है।
बेटी बनकर आई हूँ माँ–बाप के जीवन में,
बसेरा होगा मेरा कल किसी और आँगन में।

✯✯✯✯

श्री मिस्तरी एम जी, 1649 मार्गदर्शक इकाई (ग्रेफ)/
758 कृतिक बल, स्वास्तिक परियोजना

पीले पत्ते और हमारे बुजुर्ग

टहनियों पर लगे पीले पत्ते मत तोड़ो तुम
चंद रोज में वे खुद ब खुद झड़ जायेंगे।
बैठा करो कुछ देर तो बुजुर्गों के पास तुम
एक दिन खुद ही चुप हो जायेंगे।
खर्चने दो उन्हें बेहिसाब
एक दिन सब तुम्हारे लिए ही छोड़ जायेंगे।
ठीक उसी तरह पौधों की टहनियों पर लगे पत्ते
मत तोड़ो तुम एक दिन खुद–ब–खुद झड़ जायेंगे।
मत टोको उनको बार बार बात दोहराने पर
एक दिन हमेशा के लिए खामोश हो जायेंगे।

✯✯✯✯

श्रीमती अपराजिता, पत्नी श्री सुनील कुमार,
अधीक्षण अभियंता (सिविल), कमांडर मुख्यालय 764
सी.स.कृ. बल/स्वास्तिक परियोजना

हिंदी हमारी जान

हिंदी तो हमारी जान है,
देश की पहचान है।
आओ विश्व में हिंदी को फैलाएं,
यही हमारी सच्ची शान है।
काम करें हिंदी में, बोलचाल करें हिंदी में,
हर जन का हो सहारा, यही हमारा नारा।
कार्यालय का गौरव बढ़ाए हिंदी,
देश को आगे बढ़ाए हिंदी।
मत भूलें, यह हमारी मातृभाषा है,
हिन्दुस्तानियों की आत्मा में बसी है।
ये ना कभी थमेगी, ना कभी रूकेगी।
प्यार–प्रेम जैसे शब्दों के साबुन से,
क्षेत्रीयता जैसे धब्बों को धोएगी।
चलो देश में हिंदी की दुनिया, फिर से बसाते हैं,
अपनी जुबान पर, हिंदी का तड़का लगाते हैं।
कर लेते हैं बंद, अपने दिल में हिंदी को,
और इसी हिंदी से, अपनी दुनिया बसाते हैं।

✯✯✯✯

श्री अभय कुमार, प्रवर श्रेणी लिपिक, 512 भंडार आपूर्ति परिवहन इकाई/25 सीमा सड़क कृतिक बल/सेवक परियोजना

गुणी मनुष्य अपनी प्रशंसा स्वयं नहीं करते।

"टीम स्पिरिट है सफलता की कुंजी"

समूह में काम करने का अपना एक अलग महत्व होता है, क्योंकि इसमें न सिर्फ आपको अपनी खूबियों और कमियों को पहचान कर उनको दूर करने का मौका मिलता है बल्कि इससे आप की संकल्प शक्ति भी बढ़ती है कि अपने भीतर टीम भावना कैसे पैदा करें।

किसी भी वाद–विवाद प्रतियोगिता में ट्रॉफी उस टीम को मिलती है जिसके पक्ष और विपक्ष में बोलने वाले दोनों वक्ता अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करें। वह तब संभव है जब दोनों प्रतियोगियों की आदतें, जोश और व्यक्तित्व में तो अंतर हो, लेकिन प्रतियोगिता के लिए एक साथ तैयारी शुरू करने के दौरान दोनों एक दूसरे की कमी और आदतों से तालमेल बिठाने की कोशिश करते हों। वह अपने कमजोर पक्षों को स्वयं ही दूर करके अपनी खूबियों को निखारते हैं, क्योंकि दोनों का ही अंतिम लक्ष्य अपनी टीम को जिताना होता है। दरअसल इसी से उनके भीतर टीम भावना आती है। सच तो यह है कि व्यक्तिगत अहम् और स्वार्थ को छोड़कर सामूहिक हित के लिए प्रयास करना ही टीम स्पिरिट कहलाता है।

डर दूर करें

जब हम कोई कार्य समूह में करते हैं तो उस समय हमारे माइनस पॉइंट भी प्लस पॉइंट में बदल जाते हैं। दरअसल इंसान के भीतर सबसे बड़ा डर होता है असफलता का डर। उसे ऐसा लगता है कि पता नहीं वह दिए गए किसी काम को पूरा करने में सफल हो भी पाएगा या नहीं। लेकिन जब एक ही काम को हम सब व्यक्ति एक साथ मिलकर करते हैं तो अंतर्मुखी प्रवृत्ति के व्यक्ति के मन से भी डर निकल जाता है। उसकी इच्छा–शक्ति जाग्रत होती है, जिससे उस व्यक्ति में आत्मविश्वास का संचार होता है और वह अपना सर्वश्रेठ प्रदर्शन करके दिखाता है।

टीम वर्क, शून्य जोखिम

यदि किसी काम में आप को नाकामयाबी मिलती है, तो हो सकता है कि इसके लिए कई छोटी–छोटी बातें जिम्मेदार हों। लेकिन यदि आप एक टीम के रूप में काम कर रहे हैं, तो टीम के सदस्य की नजर से छोटी–छोटी कमियां छिप नहीं सकतीं और टीम की सफलता की संभावनाएं कई गुना बढ़ जाती हैं। सच कहें तो टीम वर्क में रिस्क फैक्टर बेहद कम हो जाता है, क्योंकि हर सदस्य के कंधे पर कुछ ना कुछ जिम्मेदारी होती है। यदि लक्ष्य निर्धारित हो, उसे पाने के लिए आपके साथ टीम हो और साथ में एक ऐसा टीम लीडर हो जो टीम के हर सदस्य को उत्साहित करें तो इसी से पैदा होती है टीम भावना, जो अंत में उसे लक्ष्य तक पहुंचाती हैं।

टीम भावना जगाएं

- ईगो, गुस्सा और बेवजह की आलोचनात्मक प्रवृत्तियों को अपने अंदर से बाहर निकालें।
- जिम्मेदारियों से बचने की कोशिश ना करें बल्कि जिम्मेदारियां लेना सीखें। इससे आपकी संकल्प शक्ति और ज्यादा पुख्ता होगी।
- हमेशा अपनी व दूसरों की अच्छाइयों को देखें कमियों को नहीं, इससे आपका आत्मविश्वास बढ़ता हैं।
- हर पल कुछ न कुछ सीखने की आदत डालें जो आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का संचार करती है। इसलिए दूसरों से हमेशा सीखने की कोशिश करें।
- हमेशा याद रखें कि यदि आपके काम की अहमियत है तो दूसरों की भी उससे कम नही हैं इसलिए दूसरों का आदर करना सीखें और उनके अच्छे कार्यों की प्रशंसा खुलकर करें।

–::जय हिन्द::–

☆☆☆☆

श्रीमती कुमुद पंत, धर्मपत्नी मनोज कुमार पंत, सहा. प्रशा. अधिकारी, मुख्यालय 758 सीमा सड़क कृतिक बल
स्वास्तिक परियोजना

''थोड़ा रहने पर जो दान दिया जाता है, वह हजार के बराबर होता है।''

जांस्कर घाटी : संस्कृति व सुन्दरता

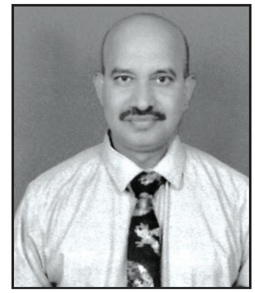

जांस्कर घाटी लद्दाख के सुदूर में अल्पविकसित, अद्वितीय सुंदरता धारण किये परी के समान है जो वास्तव में परी की तरह ही यहाँ आने वालों को सम्मोहित कर लेती है। कारगिल जिले में सहाय से लगभग 105 किमी दूर और समुद्र तल से लगभग 12000 फीट की ऊँचाई पर बसी यह घाटी उन लोगों को अधिक आकर्षित करती है जो ट्रेकिंग, रिवर राफ्टिंग और प्राकृतिक मनोहारी दृश्यों के शौकीन हैं। यहाँ की सुंदरता को दो पक्षों में बांटा जा सकता है सर्दी (अक्टूबर से अप्रैल) व गर्मी (मई से सितम्बर)। दोनों पक्षों की अपनी अलग सुंदरता व महत्व है जो इसकी संस्कृति व जीवनयापन से जुड़ी हुई है। मेरा मुख्यालय 13 सीमा सड़क कृतिक बल, जांस्कर घाटी के पदम में स्थित है, जिसके साथ 503 भण्डार आपूर्ति एवं परिवहन इकाई, 1083 क्षेत्रीय कार्यशाला एवं 1579 मार्गदर्शक इकाई भी स्थित हैं।

पदम में तैनाती के दौरान मुझे यहाँ के स्थानीय बड़े–बुजुर्गों से मिलने और उनके रहन–सहन एवं वेश–भूषा के बारे में जानने का अवसर मिला, जिसे मैं आपके समक्ष प्रस्तुत करना चाहता हूँ :–

जब यहाँ सड़कें नहीं बनी थी तब जमी हुई नदी के सहारे लोग लेह से दैनिक आवश्यकता का सामान लाते थे। इस दौरान उनको लगभग 15 दिन का समय लग जाता था। सर्दी से बचने के लिए भेड़ व बकरी के बालों से बने कपड़े पहनते थे, पैरों को ढकने के लिए जूते भी जानवरों की खाल से ही बनाये जाते थे। सर्दियाँ आने से पहले ही यहाँ के लोग अपने लिए खाने व अपने पालतू जानवरों (याक, भेड़ व बकरी) के लिए चारे का इंतजाम कर लेते हैं। यहाँ की मुख्य फसल जौ एवं गेहूँ है। जौ से यहाँ आसवन विधि से शराब बनाई जाती है, जिसे यहाँ की स्थानीय भाषा में "अरक" कहा जाता है, जो बोदका की तरह शुद्ध होती है और जौ से ही बीयर बनाई जाती है जिसे यहाँ की स्थानीय भाषा में "छांग'' कहा जाता है। मटर, दाल, मांस एवं चीज को सुखाकर सर्दियों के लिए भण्डार कर लिया जाता है। पालतू पशुओं के लिए गेहूँ व जौ के भूसे का भण्डारण कर लिया जाता है। पशुओं का गोबर सर्दियों में जलाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। जिसे हमारे संगठन में "बुखारी" बोलते हैं उसी तरह का यहां का चूल्हा होता है जो खाना बनाने के साथ–साथ कमरे को गर्म रखने के काम आता है, जिससे ''एक पंथ दो काज'' हो जाते हैं। इसके तीन मुहाने होते हैं। यहाँ याक के दूध का चीज बहुत ही प्रसिद्ध है। इस चीज को लोग सुखा कर रखते हैं और हिमपात/सर्दियों के दौरान इस्तेमाल करते हैं।

जैसा कि मैं सर्दी के बारे में पहले ही बता चुका हूँ, अब मैं दूसरे पक्ष, यहाँ की गर्मियों के बारे में बात करता हूँ। गर्मियों में यहाँ के चरागाह, याक, भेड़ व बकरियों की चहल कदमी से अजब की खूबसूरती पैदा करते हैं। गर्मियों के प्रारम्भ में जब घास हरी–भरी होनी प्रारम्भ होती है, पेड़ों में कोपलें आने लगती हैं, जनजीवन सामान्य होने लगता है, झरने व झीलें भी अपनी अलग छटा बिखेरते हैं। पर्यटक आने शुरू हो जाते हैं। दुकानें खुलनी प्रारंभ हो जाती हैं। जांस्कर घाटी में विभिन्न प्रकार के फूल मन मोह लेते हैं, जो यदा कदा खुद ही पनपते हैं, और कहीं–कहीं सामूहिक रूप से खिलकर फूलों की घाटी का आभास दिलाते हैं।

फिर अक्टूबर में मौसम करवट लेने लगता है, हरी–हरी घास सूखकर लाल कुछ उजली होने लग जाती है, फिर पहाड़ों का भी रंग हरे से लाल व उजला हो जाता है, फिर आती है बर्फीली दुनियाँ की बारी। सिर्फ व सिर्फ बर्फ का साम्राज्य जो किसी का भी मन मोह लेता है।

बर्फ से ढके पहाड़ों और स्वच्छ नदियों से सजी इस घाटी की सुन्दरता देखते ही बनती है। और तो और जब पूर्णिमा की रात हो व घाटी बर्फ से आच्छादित हो तो परी लोक का आभास देती है, उसमें जांस्कर नदी में चाँद का प्रतिबिम्ब और भी मनमोहक होता है।

नीतिज्ञ के लिए यश और धन की कमी नहीं है।

पदम से 70 किमी दूर निराक में 114 सड़क निर्माण इकाई का मुख्यालय स्थित है। यहां एक झरना है जो सर्दियों में जम जाता है और ऐसा लगता है कि समय स्थिर खड़ा है, झरने का गिरता पानी बर्फ की जटिल सरंचना बनाता है जो चट्टानों पर चमकती हुई बर्फ की परत से बनती है और बर्फ से आती सूर्य की रोशनी रंगों का एक मनमोहक दृश्य बनाती है। यहीं से एक अनोखा रास्ता है, जिसे देखने व अनुभव करने देश–विदेश से सैलानी आते हैं जिसे "चादर ट्रेक" कहा जाता है। "चादर" का अंग्रेजी अर्थ "कंबल" या "एक चादर" होता है जो जमी हुई जांस्कर नदी का सटीक वर्णन करता है। कठोर सर्दियों में यह नदी एक जमी हुई सड़क में बदल जाती है जो एक अवास्तविक और रोमांचकारी ट्रैकिंग अनुभव प्रदान करती है।

लगातार जमने और पिघलने से धीरे–धीरे नदी पर बर्फ की चादर बन जाती है। यह नदी संकरी घाटियों से होकर गुजरती है इसलिए कम चौड़ाई और सूरज की रोशनी के सीमित संपर्क से नदी को लगातार जमने के लिए आवश्यक कम तापमान बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

मुझे अपने मुख्यालय एवं 114 सड़क निर्माण इकाई (ग्रेफ) के अधिकारियों के साथ चादर ट्रैक को पार करने का मौका मिला, जिसे जीवन में एक बार होने वाला अनुभव मानते हैं। इसका कारण यह है कि यह लुभावनी प्राकृतिक सुंदरता का एक मनोरम दृश्य प्रस्तुत करता है। आसपास के परिदृश्य और ऊपर के नीले आसमान को निहारते हुए जमी हुई नदी पर चलना एक अलौकिक अनुभव है, क्योंकि क्रिस्टल क्लियर बर्फ पर चलते हुए पैरों के नीचे नदी का तल दिखाई देता है। जमी हुई नदी की अलौकिक सुंदरता, इसकी जटिल बर्फ संरचना और हमेशा बदलती बनावट देखने लायक है।

☆☆☆☆

श्री संजय कुमार उजाला, सहायक प्रशासनिक अधिकारी, मु० 13 सीमा सडक कृतिक बल/योजक परियोजना

रिमझिम वर्षा

रिमझिम बरसे पानी, मन को भाए,
धरती की प्यास बुझाए, सुख चैन लाए।
हरियाली की चादर, ओढ़ाए धरती को,
सजाए कुदरत की रंगत, हर दिल को।
नन्हें–नन्हें बच्चे, कागज की नाव चलाएं,
बारिश की बूंदों में, खुशी से झूमें गाएं।
महकती माटी की खुशबू, महकाए तन–मन,
रिमझिम बारिश के संग, दिल बहलाए।
बूंदे गिरें, गीत गाएं, रिमझिम की छांव,
हर दिल में उमंग, हर खुशी का दाँव।
रिमझिम बरसात का मौसम, खुशियां लाए,
धरती और अंबर को, प्रेम से सजाए।
रिमझिम बरसे पानी, मन को भाए।

☆☆☆☆

श्री अशोक ठाकुर, प्रवर श्रेणी लिपिक, ई1बी/
कार्मिक निदेशालय/सीमा सड़क महानिदेशालय

माँ की ममता

घुटनों से रेंगते–रेंगते।
कब पैरों पर खड़ा हुआ।।
तेरी ममता के छाँव में।
जाने कब मैं बड़ा हुआ।।
काला टीका दूध मलाई।
आज भी सब कुछ वैसा है।।
दिखाई देती तू हर जगह।
प्यार ये तेरा कैसा है।।
सीधा–साधा भोला–भाला।
मैं ही सबसे अच्छा हूँ।।
कितना भी हो जाऊँ बड़ा।
माँ मैं तेरी आँखों के सामने।
मैं आज भी एक बच्चा हूँ।।

☆☆☆☆

श्री बोध राज, 1649 मार्गदर्शक इकाई (ग्रेफ),
मुख्यालय 758 सी.स.कृ. बल/स्वास्तिक परियोजना

पारस्परिक व्यवहार प्रगति का सार है।

पापा प्लीज डू इट अगेन
PAPA PLEASE DO IT AGAIN

एक दिन मैंने अंग्रेजी साहित्य के महान कवि लॉर्ड अल्फ्रेड टेनिसन का एक संस्मरण पढ़ा। उन्होंने लिखा है कि एक बार वह छुट्टी मनाने समुद्र के किनारे किसी सुदूर स्थान पर थे। शाम का समय था, सूर्यास्त होने को था और सूरज अपनी सम्पूर्ण लालिमा लिए मानो अपने परिवार के साथ पश्चिम दिशा में दुनिया से विदा लेकर समुन्दर में डूबने को तैयार था।

ये घटना एक कवि के लिए तो बहुत ही काव्यपूर्ण एवं विस्मयकारी थी, जो प्रकृति में घटित सौन्दर्य की अद्भुत अभिव्यक्ति थी। लेकिन **महाकवि Tennyson** ने उसी किनारे पर एक पिता के झूठे अहंकार के किले को भी ढहते हुए देखा, जिसमें एक पिता अपने नकली अहम् एवं छद्म अहंकार के किले को बना रहा था और अपनी झेंप और अपनी कल्पना के कवच से ढाँपने की असफल कोशिश कर रहा था। जब सूर्य डूब रहा था पश्चिम के दूर क्षितिज में सूरज अपनी लालिमा के साथ सागर में लय होने को तैयार था तभी पिता ने अपने बेटे के सामने अपनी झूठी शक्ति का प्रदर्शन करते हुए अपनी ऊँगली दूर क्षतिज की ओर उठाते हुए डूबते सूर्य की तरफ ऊँगली का इशारा करते हुए कहा **Please Go down – Go down – Go down** और मानो चमत्कार हो गया ज्यों–ज्यों पिता इशारा कर रहा था त्यों–त्यों सूरज डूबता जा रहा था, और अन्ततः पिता की उंगली के इशारे के अनुसार सूरज डूब गया।

लेकिन फिर वो हुआ जिसे पिता ने सोचा भी नहीं होगा। बच्चे ने पिता से कहा कि Papa Please - do it Again – do it Again Please-Papa, Please.

यह बात सुनकर पिता तो मानो अवाक रह गया मानो वह युद्ध के मैदान में निःशस्त्र एवं निहत्था हो गया हो। लेकिन हर पिता अपने आपको बेटे से ऊपर मानकर बैठा हुआ है। जबकि अंग्रेजी के एक अन्य महाकवि **William Wordsworth** ने अपनी एक कविता में कहा है कि **"The Child is the Father of Man"**. पापा के पास इस बात का कोई जवाब तो था ही नहीं, तो उसने बच्चे की जिज्ञासा को शांत करने के लिए कहा कि **"मेरे बेटे ये काम कुछ ऐसा है कि इसे 24 घंटे में केवल एक ही बार किया जा सकता है, इसके लिये हमें कल फिर इस जगह पर आना होगा"।** इस बेटे की जिज्ञासा को तो पिता ने झूठ बोलकर शांत कर दिया या यूँ कहें कि उसकी जिज्ञासा की हत्या कर दी।

जी हाँ जरा गौर करें, आपके और हमारे दैनिक जीवन में हम अपने बच्चों के साथ क्या–क्या कर रहे हैं। हम शायद उनके बचपन के साथ अन्याय, उत्पीड़न, एवं खिलवाड़ कर रहे हैं। आज का बच्चा माँ – बाप की अधूरी ख्वाहिशों का बोझ ढो रहा है, एक ऐसा बोझ जो उसके छोटे और कोमल पैरों की गति से बहुत ज्यादा है और जिसे उसके नाजुक कंधे न तो उठा सकते हैं और न ही उसे अपने कदमों की चाप से हकीकत में जमीन पर ला सकते हैं।

मतलब कुछ ऐसे ख्वाब, कुछ ऐसे सपने, कुछ ऐसे मुकाम जिनकी ऊँचाइयों पर पिता खुद नहीं पहुँच पाया या जो शोहरत जो कामयाबी पिता अपने जीवन में हासिल नहीं कर पाया वो उसे अपने बच्चे के माध्यम से पूरा करके समाज के सामने अपनी कथित प्रतिष्ठा को बढ़ाना चाहता है।

दूसरे शब्दों में कहें तो बेटा पिता के हाथ में एक उपकरण मात्र है जो केवल उसके खोखले ख्वाबों को पूरा करने के लिए है। वो कोई जीवित स्पंदन करने वाला प्राणी नहीं है। आज वास्तव में बच्चों के ऊपर जो दबाव है, उसके चलते कई बच्चे अपनी जीवन लीला को समाप्त कर रहे हैं तथा छात्रों के लिए आत्महत्या एक आम बात हो गई है। हम एक समाज के रूप में इतने संवेदनहीन हो चुके हैं कि हमें इन बच्चों की सिसकियाँ सुनाई ही नहीं देती। शिक्षा के बेतहाशा बढ़ते व्यवसायीकरण और निजी कोचिंग संस्थानों के बेरहम और गैर–इंसानी रवैये के कारण छात्रों के ऊपर जो दबाव आया है वह उन्हें दो पाटों के बीच में पिसने के लिए छोड़ रहा है, जिससे वो नकली रेस के घोड़े बनकर रह जाते हैं, जो जीवन में थोड़ी सी भी निराशा एव विषाद को

झेल नहीं पाते और आत्महत्या जैसे घातक कदम उठाकर माँ—बाप को अकेला छोड़ देते हैं।

आज हमारे देश में कोटा, औरंगाबाद, नासिक, पुणे दिल्ली आदि कुछ ऐसे शहर बन गए हैं, जो अपनी इस स्पंदनहीन एव मानव संवेनहीनता वाली शिक्षा की दुकानों के लिए कुख्यात हो गए हैं, जो विद्यार्थियों के लिए मानो किसी कत्लगाह, किसी मकतल से कम साबित नहीं हो रहे हैं। जहाँ विद्यार्थियों एवं उनके माँ—बाप के लिए इतने हसीन एवं ऐसे सुनहरे सपने बेचे जा रहे हैं जो कभी पूरे ही नहीं हो सकते। ये ऐसी जगह बन गई है जहाँ भारत के गावं—देहात और सुदूर पिछड़े इलाकों से आकर विद्यार्थी अपने जीवन में कुछ करने की चाहत रखते हैं। बस यह चाहत ही उनके जीवन के लिए एक विष—एक जहर का काम करती है। मेरा यह कतई कहना नहीं है कि बच्चों के लिए सपने न देखे जाएं लेकिन कोई भी सपना जीवन से कीमती नहीं है। माँ—बाप को वही सपना देखना चाहिए, जो वो पूरा कर सकते हैं। जीवन में एक—एक कदम से ही मंजिल मिलती है, सफलता के लिये कोई शॉर्टकट नहीं है, इसलिए सपनों की दुकानों में नहीं विद्या के मंदिरों की नींव मजबूत की जाय, न कि निजी संस्थानों की, जो पैसों के बदले में केवल और केवल मौत बेच रहे हैं। हर साल पापा के सपनों के बोझ तले कई छात्र दम तोड़ रहे हैं। इसलिए अपने अधूरे सपनों को बेटे के कंधो का सहारा लेकर उसके जीवन से न खेला जाय। चूंकि बच्चों का जीवन अमूल्य है इसे न तो रिक्रियेट (Recreate) और न ही रिडु (Redo) किया जा सकता है। सपनों की उड़ान असली दुनियां में नहीं होती वह केवल सपनों में ही होती है। सपने देखना जीवन में आगे बढ़ने की आकांक्षा है, यह कहीं जिजीविषा न बन जाये। बच्चे के कदमों और छलांग में उतना ही अंतर रखा जाय जितना एक कदम और दूसरे कदम के बीच की दूरी होती है। चूंकि जीवन में एक—एक कदम तय करके ही मंजिल पाई जाती है छलांग से नहीं। ऊंची छलांग लेने के लिए भी लंबे सधे कदमों की जरूरत होती है।

''तेते पांव पसारिए जेती लंबी सौर''।

☆☆☆☆

डॉ. वंदना डी एस (मुंडासे) गौर, प्रोफेसर, राष्ट्र संत तुकडोजी महाराज, नागपुर विद्यापीठ नागपुर, धर्मपत्नी
श्री धीर सिंह,वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी, मुख्यालय सीमा सड़क संगठन

मेरा संगठन – सीमा सड़क संगठन

मेरा संगठन है मेरा सहारा।
सीमा सड़क है सबसे प्यारा।।
पर्वतों को तोड़ा हमने।
नई राहों को जोड़ा हमने।।
बहाकर खून पसीना अपना
हिमालय को भी पीछे छोड़ा हमने।।
ऊँचे—ऊँचे पर्वतों पर।
सड़क—पुलों का जाल बिछाया।।
अपने जवानों के परिश्रम व बलिदानों से।
सीमा को सुरक्षित करवाया।।
हर ऊँची चोटी पे तिरंगा है लहराया।।
चुनौतियों को सदा हमने है स्वीकारा।
श्रमेण सर्वम् साध्यम् है हमारा नारा।।
मेरा संगठन है मेरा सहारा।
सीमा सड़क है सबसे प्यारा।।

☆☆☆☆

श्री दीपक कुमार, अवर श्रेणी लिपिक, ग्रेफ अभिलेख, पुणे—15

मैं भारत का जवान हूँ

मरुस्थल की रेत हूँ, सियाचिन का आसमान हूँ,
मैं भारत का जवान हूँ, मैं दुश्मन से नहीं डरता हूँ।

मैं जून में तपती रेत पर लेटे कहता हूँ
आज सर्दी कम है,
दिसंबर की ठंड पीकर कहता हूँ,
गर्मी का मौसम है,
मैं बर्फ में नौ दिन दफन होकर,
जिंदा निकलता हूँ,
सीने में अपनी साँस को, टुकड़ों में भरता हूँ,
मैं भारत का जवान हूँ, मैं दुश्मन से नहीं डरता हूँ।
माइनस तीस डिग्री में राइफल टाँग कर,
टहलने निकलता हूँ,
आदमजात की औकात क्या,
जब मैं कुदरत से नहीं डरता हूँ,
मैं भारत का जवान हूँ, मैं दुश्मन से नहीं डरता हूँ।

चाँद हर ईद में तनहाई में इजाफा लाता है,
मुझे राखी बांधने बस एक लिफाफा आता है,
अपनी माँ के पैर छूए मुझे एक अरसा हो गया है,
मेरा बाप मेरे इंतजार में बूढ़ा हो गया है,
मेरी बीवी सिंदूर लगा कर भी लगती कुँवारी है,

हाँ मैं निर्दयी हूँ, मैं अपने उजड़े घर–आँगन से नहीं डरता हूँ
मैं भारत का जवान हूँ, मैं दुश्मन से नहीं डरता हूँ।

☆☆☆☆

श्रीमती पल्लवी एस. गायकवाड, पत्नी प्रवर श्रेणी लिपिक संदीप जी. गायकवाड़, मुख्यालय हिमांक परियोजना

असफलता–सफलता का पहला कदम

जीतने के लिए हारना ज़रूरी है,
यह सुना तो था पर कभी समझ नहीं पायी थी।
गिरना फिर हंसकर उठना,
ये कला मुझमें अभी नहीं आई थी...
हर मुकाम एक ही बार में हासिल करना चाहती थी,
मैं बिना हारे जीत की खुशी मनाना चाहती थी।

पर कभी तो सच से वाकिफ होना था,
कभी तो जीत की असली खुशी का एहसास होना था।
असली खुशी... जो हारने के बाद जीत कर मिलती है,
असली खुशी.... जो गिरने के बाद उठकर मिलती है।

हुई विफल मैं जब पहली बार,
तब सफल होने के लिए जी जान लगाई थी।
उठ गया विश्वास मानो मेरा खुद पर से,
मेरी उम्मीदों के पन्नों पर जो गिर गई मेरी नाकामयाबी की स्याही थी...

फ़िर से ना हार जाऊं यह डर मुझे अभी भी कहीं ना कहीं सता रहा था।
पर इस बार हर हाल में बेहतर करुंगी,
मेरा आत्म–विश्वास मुझे यह बता रहा था।
की मैंने कोशिश दोबारा, मुश्किलें आई बहुत सी अब भी।
पर इस बार मेरा मन नहीं हारा था,
पा लिया मैंने जो मुझे पाना था।

सच बताऊं खुशी का ना कोई ठिकाना था,
शुक्रिया उन्हें भी जिन्होंने कहा, 'तुमसे नहीं होगा'।
मुझे यह बार–बार सुनाया था,
तुमसे बेहतर जानती हूं मैं अपनी क्षमता को,
तुम्हारी इसी बात ने मुझे यह एहसास कराया था।
तुम्हारी इसी बात ने मुझे यह एहसास कराया था।

☆☆☆☆

श्रेया कपूर, पुत्री श्री पवन कुमार, मुख्य प्रारूपकार, मुख्यालय ब्रह्मांक परियोजना

जिसको लगन है वह साधन भी जुटा लेता है।

हिंदी भाषा के विभिन्न आयाम

लोगों की सांस्कृतिक और सामाजिक पहचान को आकार देने में भाषा की अहम भूमिका होती है। भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में भाषा सिर्फ संचार का माध्यम नहीं रह जाती – यह सांस्कृतिक विरासत और एकता की अभिव्यक्ति और वाहक बन जाती है।

वैसे तो भारत में हज़ारों भाषाएँ हैं, लेकिन भाषाई रूप से विविधतापूर्ण इस देश में हिंदी का एक महत्वपूर्ण स्थान है। हिंदी भारत में सबसे ज़्यादा बोली जाने वाली भाषा है। यह अलग–अलग पृष्ठभूमि और संस्कृतियों वाली विविध आबादी के बीच की खाई को पाटती है। हिंदी एक सांस्कृतिक प्रतीक से कम नहीं है जो एक विविध भाषा–भाषी आबादी को एकजुट करती है। लेकिन क्या यह सचमुच इतना महत्वपूर्ण है? विशेषकर आज की आधुनिक दुनिया में।

हिंदी भाषा का इतिहास बहुत समृद्ध है, जो मध्यकाल से ही चला आ रहा है। प्राचीन संस्कृत भाषा में निहित, अनेक बोलियों और क्षेत्रीय भाषाओं ने हिंदी भाषा को आकार दिया है। भारत के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भी, हिंदी, राष्ट्रवादी नेताओं के लिए अपने संदेशों को जनता तक पहुँचाने का एक महत्वपूर्ण माध्यम बनकर उभरी। यह हिंदी संचार में भाषा के महत्व को रेखांकित करता है।

स्वतंत्रता के बाद 1950 में हिंदी को अंग्रेजी के साथ भारत की आधिकारिक भाषाओं में से एक भाषा के रूप में अपनाया गया। हिंदी ने भाषाई रूप से विविध परिदृश्य में राष्ट्रीय एकता और एकीकरण की भावना को बढ़ावा दिया।

एक क्षेत्रीय बोली से राष्ट्रीय भाषा बनने की यात्रा भारत के सामाजिक–राजनीतिक ताने–बाने में इस हिंदी भाषा की भूमिका को उजागर करती है। इसके अलावा, पिछले कुछ दशकों में, हिंदी ने विभिन्न क्षेत्रीय बोलियों और आधुनिक शब्दावली को विकसित और एकीकृत किया है। यह एक भाषा के रूप में हिंदी की अनुकूलनशीलता और लचीलेपन को दर्शाता है।

भारत में हिंदी हमेशा से ही एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है, जो देश में इसकी गहरी जड़ों को दर्शाता है। यह भारत की 43% से ज़्यादा आबादी द्वारा बोली जाती है और कई राज्यों में प्राथमिक भाषा के रूप में काम करती है। कई अन्य राज्यों में यह दूसरी भाषा के रूप में काम करती है। यह भाषा की व्यापक पहुँच और स्वीकृति को दर्शाता है।

समकालीन भारत में हिंदी भाषा का महत्व इस बात से समझा जा सकता है कि सरकारी संचार में इसका व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। यह इसे देश में प्रशासनिक प्रक्रियाओं और सार्वजनिक सेवाओं का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनाता है। इतना ही नहीं, देश भर के शैक्षणिक संस्थान हिंदी को अपने पाठ्यक्रम में शामिल करते हैं। इससे छात्रों में राष्ट्रीय पहचान और सांस्कृतिक जागरूकता की भावना बढ़ती है।

भारत में मीडिया के क्षेत्र में हिंदी का बोलबाला है। यह बात भारतीय फिल्म, संगीत और टेलीविजन उद्योग के लिए खास तौर पर सच है।

बॉलीवुड के नाम से मशहूर यह दुनियां का सबसे बड़ा फिल्म उद्योग है, जो हर साल कई हिंदी फिल्में बनाता है। इन फिल्मों को बहुत सराहा जाता है और इनकी वैश्विक अपील होती है, जो न केवल भारतीय दर्शकों को बल्कि वैश्विक दर्शकों को भी प्रभावित करती है।

संगीत और साहित्य पर भी हिंदी का महत्वपूर्ण प्रभाव है। हर साल इस भाषा में कई गीत, किताबें और कविताएँ लिखी जाती हैं। हिंदी के इस व्यापक उपयोग ने आधुनिक भारत में इसकी प्रासंगिकता और आकर्षण को बनाए रखने में मदद की है। यह भी ध्यान रखना ज़रूरी है कि कई फ़िल्मों और गानों में हिंग्लिश का इस्तेमाल किया जाता है, जो हिंदी और अंग्रेज़ी का मिश्रण है।

हिंदी सिर्फ़ एक भाषा नहीं है, यह भारत की समृद्ध परंपराओं, रीति–रिवाजों और विरासत की वाहक के रूप में कार्य करती है। भारत की समृद्ध संस्कृति को संरक्षित करने और बढ़ावा देने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है,

खासकर उन क्षेत्रों में जहाँ हिंदी प्राथमिक भाषा है। यह भाषा एक सेतु के रूप में कार्य करती है जो भारत की विविध संस्कृतियों को एकजुट करती है और सामाजिक एकीकरण की भावना पैदा करती है।

भारत में हिंदी भाषा का महत्व सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर भी स्पष्ट है। यह प्रभावी संचार और समुदाय निर्माण को सक्षम बनाता है।

भारत के विभिन्न क्षेत्रों में हिंदी भाषा का आर्थिक महत्व बहुत अधिक है। हिंदी भाषी क्षेत्र जनसंख्या का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। हिंदी विज्ञापनों और मार्केटिंग अभियानों का उपयोग करके व्यवसायों को दर्शकों के व्यापक आधार तक पहुँचाने में मदद करती है। हिंदी में संवाद करके व्यवसायी अपने दर्शकों के साथ अधिक प्रभावी ढंग से जुड़ सकते हैं।

एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत में लगभग 57% इंटरनेट उपयोगकर्ता ऑनलाइन भारतीय भाषाओं का उपयोग करते हैं, जिसमें हिंदी सबसे आगे है। यही कारण है कि देश भर के व्यवसाय स्थानीयकरण के माध्यम से अपने उत्पादों और सेवाओं को स्थानीय प्राथमिकताओं और सांस्कृतिक बारीकियों के अनुरूप बनाने पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं।

जो व्यवसायी अपनी संचार रणनीतियों में हिंदी को अपनाते हैं, वे ग्राहकों के साथ गहरे स्तर पर जुड़ सकते हैं। इससे ब्रांड निष्ठा, बिक्री और दीर्घकालिक विकास में वृद्धि हो सकती है।

भारत सरकार ने भी वैश्विक स्तर पर हिंदी भाषा के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए कदम उठाए हैं। 2022 में, गृह मंत्रालय (MHA) ने विदेश मंत्रालय को बैंकों, दूतावासों और विदेशों में कार्यरत भारतीय कार्यालयों में भाषा के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए लिखा था। गृह मंत्रालय भारत सरकार द्वारा हिंदी को बढ़ावा देने के लिए सरकारी विभागों और सार्वजनिक क्षेत्रों द्वारा किए गए प्रयासों को बढ़ाने के लिए 2015–2016 में राजभाषा कीर्ति पुरस्कार का शुभारंभ किया गया।

हाल ही में तकनीकी प्रगति ने हमारे डिजिटल युग में हिंदी के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। डिजिटल प्लेटफॉर्म और सोशल मीडिया पर हिंदी सामग्री की वृद्धि हुई है। इसने भारत में डिजिटल साक्षरता और ई–गवर्नेंस को बढ़ाया है, जो लोगों को भाषा से अधिक जुड़ाव भी दिला रहा है। 5 सितंबर 2017 को भारत के माननीय उपराष्ट्रपति ने औपचारिक रूप से दीक्षा (ज्ञान साझा करने के लिए डिजिटल अवसंरचना) का शुभारंभ किया। दीक्षा ऐप हिंदी और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं सहित विभिन्न भाषाओं में ई–सामग्री प्रदान करता है।

रेवरी के भाषा उपकरण और एपीआई जैसी भाषा प्रौद्योगिकी हिंदी को बढ़ावा देने में सहायक रही है। ये उपकरण हिंदी में सहज अनुवाद, लिप्यंतरण और आवाज रूपांतरण को सक्षम करते हैं। इससे डिजिटल सामग्री हिंदी बोलने वाले लोगों के लिए अधिक सुलभ हो जाती है, जिससे उनका ऑनलाइन अनुभव बेहतर होता है।

इसके अलावा, एआई–संचालित चैटबॉट और वॉयस असिस्टेंट जैसे कि रेवरी के इंडोकॉर्ड का उदय, अत्याधुनिक तकनीकों में हिंदी के एकीकरण को दर्शाता है। यह इस बात को रेखांकित करता है कि हम जिस तकनीक प्रेमी दुनिया में रह रहे हैं, उसमें इसका महत्व बढ़ रहा है। ये नवाचार हिंदी के नए और रोमांचक तरीकों से उपयोग को और भी सुविधाजनक बनाते हैं। यह आधुनिक भारत में विकास और निरंतर प्रमुखता में योगदान देता है।

भारत की सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने के लिए हिंदी को अपनाना और बढ़ावा देना आवश्यक है। यह विभिन्न भाषाई समुदायों के बीच प्रभावी संचार भी सुनिश्चित करता है। विभिन्न ई–कॉमर्स प्लेटफ़ॉर्म पहले ही अपने प्लेटफॉर्म को हिंदी और कुछ अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के अनुकूल बना चुके हैं। इससे उन्हें देश में अपना उपयोगकर्ता आधार बढ़ाने में मदद मिली, क्योंकि उपयोगकर्ता अब अपनी मूल भाषाओं में उत्पाद खोज और खरीद सकते हैं।

एकीकृत और समावेशी भविष्य के लिए हिंदी को अपनाना अत्यंत आवश्यक है ताकि भारत वर्ष में सांस्कृतिक और सामाजिक एकीकरण, आर्थिक प्रगति एवं प्रौद्योगिकी प्रगति को एक नई दिशा मिल सके।

☆☆☆☆

श्री निरंजन कुमार सिंह, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी, मुख्यालय वर्तक परियोजना

आदमी–ऑन–लाईन बाजार का ग्राहक या वस्तु

मैं अक्सर यह सोचता रहता हूँ कि हमारी पीढ़ी शायद दुनिया की वह सौभाग्यशाली पीढ़ी है जिसकी आंखों के सामने विज्ञान ने अपने तिलिस्म से मानो एक झटके में पूरी दुनिया की शक्ल ही बदल दी है। पिछले 25 सालों में विज्ञान एवं सूचना प्रौद्योगिकी ने जो लंबी छलांग लगाई है वह मनुष्य के कल्पना लोक और इतिहास में अभी तक की शायद सबसे बड़ी छलांग है। फिर चाहे वह सड़क यातायात हो, हवाई यात्रा हो या संचार के द्रुतगामी एवं दूर–संवेदी उपकरण हों, लगता है मनुष्य ने समय के अनंत फासले को पाटते हुए उसकी गति के समानान्तर या यूं कहें उस की गति से बढ़कर सुख–सुविधाएं जुटा ली हैं। आज से 20 साल पहले मोबाइल की संचार गति के विषय में सोचना न केवल असंभव प्रतीत होता था, अपितु यह अविश्वसनीय एवं कल्पनातीत भी मालूम पड़ता था। इस छोटे से डिवाइस में मानो पूरी दुनियां समा गई है। इसके जरिये हम दुनियां से जुड़ते हैं और आज तो इसी के जरिये अपना मनोरंजन भी करते हैं तथा यह हमारे ज्ञान एवं चेतना का न केवल सहगामी बना है अपितु यह हमारे चिंतन का पुरोगामी भी है।

मनुष्य के इस तिलिस्मी सफर में जिस तेजी से तरक्की हुई है, उसी रफ्तार से नुकसान भी हुआ है। मसलन आदमी भीड़ में भी अकेला हो गया है और उसके रिश्ते अपनी रंगत और गहराई खोते मालूम पड़ रहे हैं। इस हालात को उर्दू साहित्य के नुमाया शायर निदा फाजली साहब ने बखूबी बयान किया है :–

हर तरफ हर जगह बेशुमार आदमी।
फिर भी तनहाइयों का शिकार आदमी।।

जी हाँ आदमी हाथ में मोबाइल लिए बैठा है, रिसीव, डिलीट, फॉरवर्ड में लीन है। जिसमें उसके जीवन का बहुत बड़ा हिस्सा खर्च हो रहा है, लेकिन उसके पास अपने रक्त–संबंधी लोगों के लिए समय नहीं है। रील में आदमी का रियल गायब हो गया है, अर्थात हमारी चेतना के यथार्थवादी पहलू से हटकर हम कहीं सपनों के लोक में समाते जा रहे हैं। दूसरा सबसे बड़ा प्रभाव स्त्री की गरिमा पर पड़ा है, जो कि स्त्री की स्वतंत्रता और अस्मिता के लिए बड़ा आघात साबित हुआ है और मोबाइल क्रान्ति ने तो उसे बाजार की एक उपभोक्ता वस्तु में तब्दील कर दिया है। चारों तरफ उसके जिस्म की नुमाइश हो रही है और वस्तु के रूप में उसके ऑनलाईन व्यापार की जघन्यता जैसे अपराध मनुष्य के पतन की कहानी लिख रहे हैं जिससे स्त्री के शोषण एवं जघन्य अपराधों का नर्क टच स्क्रीन पर तैरता नजर आता है।

युवा पीढ़ी की मनोदशा और हिंसा में संलिप्तता तथा नागरिक संवेदनहीनता का भीड़ में परिवर्तन और नई पीढ़ी में प्रौढ़ता की कमी से पैदा हुए अंतराल के परिणामस्वरूप परिवार में बढ़ती सवांदहीनता एवं नई नस्ल के बच्चों में चमत्कारिक गति से बिना प्रयास किए उच्च लक्ष्यों को प्राप्त करने की वृत्ति तथा पैसा कमाने के स्थान पर पैसा बनाने की सोच से समाज के स्थापित मूल्यों एवं सांस्कृतिक विरासत का ह्रास इत्यादि कुछ ऐसे दुष्प्रभाव हैं, जिसने हमारी सभ्यता के चेहरे पर बदनुमा दाग उकेर दिये हैं। ऑनलाइन संगठित अपराध एवं धन की लूट के मामलों को रोकने हेतु विश्व की अमूमन सभी सरकारों के पास पर्याप्त सुरक्षा इंतजाम न के बराबर हैं। हमारे कठोर परिश्रम से कमाया गया धन कब लुट जाएगा पता नहीं।

तथापि, मेरा ऐसा कदापि मानना नहीं हैं कि तकनीकी क्रान्ति से मनुष्य का जीवन अछूता रह जाए और हम शेष विश्व से अलग–थलग हो जाएं। लेकिन हमारी इस क्रान्तिकारी प्रगति की कीमत क्या हो, किसके बदले में हम यह सब अपने जीवन में ग्रहण कर रहे हैं, इसके विषय में हमें जरूर पुनर्विचार करना होगा।

हमारे परिवार एवं मां–बाप की जगह ओल्ड ऐज होम न होकर हमारा घर होना चाहिए। जिस घर को बनाने में उन्होंने अपनी उम्र गुजार दी है, यदि बेटे ने तरक्की करके अपना घर बना लिया है, तो उसमें कोई खिड़की ऐसी भी हो जिससे मां बाप का चेहरा निहारा जा सके। स्मार्ट फोन के टच स्क्रीन पर दिखने वाले फोटोज से असल दुनियां बहुत

खूबसूरत है। इस उपकरण का उपयोग कर इसकी नकली दुनियां में गुम होना दुनियां से अलग–थलग होना हमें दुनियां से काटकर मानसिक विषाद में धकेल सकता है।

मेरे इस लेख का एक और अत्यधिक महत्वपूर्ण पहलू जिसका उल्लेख किए बिना शायद मेरी यह बात अधूरी रह जाएगी और वह विषय है स्मार्ट फोन कम्पनियों द्वारा पूरे विश्व के प्राकृतिक संसाधनों का दोहन एवं अपरिमित मात्रा में खनिज धातुओं का खनन किया जाना। जबसे मोबाइल क्रान्ति आई है, मेरा अपना मानना यह है कि हर आदमी ने 15 वर्षों में औसतन 10 मोबाइल खरीदे हैं। क्या यह संभव नहीं था कि हमारे सामने ये मोबाइल कंपनियां ऐसे बेहतर विकल्प देती और लोग आर्थिक नुकसान से बचते हुए दुनियां में बढ़ रहे इलैक्ट्रॉनिक कचरे को बढाने में योगदान देने से भी बच सकते थे। चूंकि स्मार्ट फोन कंपनियां जब अपने फोन का नया मॉडल या वर्जन बाजार में उतारती है, तो वे उपभोक्ता के सामने पुराने स्मार्ट फोन और गैजेट को अपग्रेड करने का विकल्प नहीं रखती हैं।

आज के युग में मोबाइल एक ऐसा विश्वसनीय साथी बन चुका है कि उसके बगैर जीवन की बहुत सी समस्याएं जटिल रूप ले लेंगी। फोन के आने से इसने चीजों में आसानी लाकर जीवन को सुगम और सुविधाओं से लैस कर दिया है।

पुराना स्मार्ट फोन या गैजेट को ठीक कराना या मरम्मत कराना एक मुश्किल काम है और यही समस्या एक वैश्विक समस्या बन चुकी है। एक अनुमान के मुताबिक दुनिया भर में 5 करोड़ मैट्रिक टन ई–वेस्ट यानि इलैक्ट्रानिक कचरा पैदा हो रहा है; यह हर सैकेन्ड 1 हजार लैपटॉप को कचरे में फेंकने के जैसा है।

हम थोड़े भी पुराने पड़ गये इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स के बदले नया खरीद लेते हैं, और पुराने को कचरे में डाल देते हैं, क्योंकि फोन टेक कंपनियों से फोन को रिपेयर कराना मुश्किल और महंगा है। इसके पीछे फोन बनाने वाली कंपनियां हैं। अब हमारे सामने एक छोटी सी समस्या है कि हमारा डिवाईस खराब होता है तो हम स्मार्ट फोन की बैटरी तक को आसानी से नहीं बदल सकते, या फिर मोबाईल कंपनियां और अपलोड होने वाले ऐप का अपडेशन होने पर डिवाईस का अपडेशन नहीं होता है और हमें नये मॉडल का फोन खरीदना होता है, जो कि उपभोक्ता के लिए घाटे का सौदा है और फोन कंपनी के लिए हमेशा फायदा ही फायदा लेकर आता है। चूँकि पुराने सॉफ्टवेयर को अपडेट करने में फोन कंपनियां उपभोक्ता की ज्यादा मदद नहीं करती और न ही वह पुराने पड़ चुके फोन को एक्सचेंज करने की जहमत उठाती है। कंपनियों की नजर केवल उपभोक्ताओं की जेब पर है, वो केवल ये चाहती है कि हम उनसे नये–नये फोन खरीदते रहें, जिससे उनकी कमाई चलती रहे। स्मार्ट फोन की छोटी सी खामी को ठीक कराना बहुत मुश्किल काम है, किसी रजिस्टर्ड स्टोर से मरम्मत कराते हैं तो बड़ा खर्च आता है, क्योंकि फोन कंपनियां रिपेयर से भी बड़ा पैसा कमाती है।

एक और गजब का मामला देखने में आया है कि प्रतिष्ठित और बड़े नामी ब्रांड वाली महंगी कंपनियों ने अपने सॉफ्टवेयर लॉक कर दिये हैं, यदि हम इस फोन को सुधारते हैं या कोई पुर्जा बदलते हैं, तो फोन के सिस्टम को इस बात का पता चल जाता है और उपभोक्ता को वार्निंग आना शुरू हो जाती है, या फिर फोन ही बंद हो जाता है। ये कंपनिया इस बारे में कहती हैं कि ये सिर्फ डिवाइस के ठीक से काम करने की स्थिति को जानने के लिए किया जाता है। लेकिन ये असल में कंपनी का अपने स्पेयर बेचने का तरीका है।

इतनी आफत से बचने के लिए उपभोक्ता के पास केवल नया फोन खरीदने का ही विकल्प बचता है। फोन कंपनियां यही तो चाहती हैं। इसका मतलब यह हुआ कि ज्यादा फोन बनेंगे और दुनिया भर में नये फोन बेचे जाते रहेंगे। इसका परिणाम यह होगा कि संसाधनों की बर्बादी और प्राकृतिक खनिजों का बेजा उत्खनन किया जायेगा और दुनिया में कार्बन उत्सर्जन की मात्रा में वृद्धि के साथ–साथ बेशकीमती धातुओं जैसे सोना, चांदी, लीड, अभ्रक आदि का खनन एवं ई–वेस्ट के परिणामस्वरूप इलेक्ट्रानिक कचरे का अंबार दुनिया भर में बढ़ेगा। पूरी दुनियां में पिछले 20 सालों में हजारों टन ई–फोन कचरे में फेंक दिये गये हैं। दुनियां भर में लोगों में नये–नये फोन खरीदने का जुनून सवार है। यदि ऐसा ही चलता रहा तो आने वाले 20 वर्षों में पूरी दुनियां ई–कचरे से पट जायेगी। नये गजट खरीदने से बेहतर यह होगा कि हमारे पास पुराने फोन को ठीक कराने के लिए बेहतर एवं सस्ते विकल्प उपलब्ध हों, इससे न केवल पर्यावरण के संरक्षण में फायदा होगा अपितु लोगों के आर्थिक अपव्यय प्रबंधन में भी सुधार होगा। भारत जैसे गरीब मुल्क में जहां लोग स्मार्ट फोन की दीवानगी में ईएमआई पर ये डिवाइस खरीदकर अनावश्यक कर्जे में दबे रहते हैं, उनका आर्थिक प्रबंधन बेहतर हो सकेगा।

दुनिया के बड़े ब्रांड वाली कंपनियों को खुद पहल करके विश्वसनीय एव टिकाऊ उत्पाद बनाकर जनता को

समय और शब्दों को वापस नहीं लाया जा सकता।

उपलब्ध्ध कराने चाहिए, जिनकी रिपेयर और लागत का खर्चा आम–आदमी के लिए किफायती हो। इसके उलट बडी टेक कंपनी अपने पेटेंट, बौद्धिक संपदा अधिकार कानून आदि का हवाला देकर दुनिया भर की सरकारों पर दबाव बनाने में सफल रही हैं और ऐसा कोई भी कानून किसी भी देश में अमल में नहीं लाया जा सका, जिससे इस बढ़ते ई–कचरे के अंबार से दुनिया को बचाया जा सके। मतलब इस समस्या का कोई निवारक उपाय दुनियां के सामने फिलहाल तो नहीं है। यह उपभोक्ता एव टेक कम्पनियों के बीच के संबंधों की सबसे ख़राब स्थिति है। चूंकि टैक कम्पनी अपने उत्पाद बिक्री के पश्चात् उपभोक्ता को किसी भी प्रकार की सेवा या बेचे गए सामान की मरम्मत या देखभाल की कोई गारंटी नहीं लेती है जिससे उपभोक्ता की परेशानी बढ़ जाती है और उसे लाचार होकर नया डिवाइस खरीदना ही पड़ता है।

द्वितीय विश्व युद्ध के समय हिरोशिमा, नागासाकी की तबाही के खामियाजे को देखकर लिखी गई थीं। उस समय तो अणुबम का खतरा था लेकिन आज तो मनुष्य की बौद्धिक और मानसिक संपदा एवं सांस्कृतिक विरासत सब कुछ दांव पर लग चुका है। युद्ध में तबाह हुए हिरोशिमा और नगासाकी तो फिर से पुनर्निर्मित हो गये, लेकिन इंसान की बौद्धिक संपदा, धर्म संस्कार और अस्मिता यदि टच स्क्रीन टैक कम्पनियों के हवाले कर दी गई तो इसके परिणाम कितने भयावह होंगे इसका अंदाजा हम आज नहीं लगा सकते।

मनुष्य को अपनी चेतना को यदि उसके शिखर तक ले जाना है तो उसके लिए यह जरुरी है कि पहले मनुष्य को बचाया जाय और विज्ञान और तकनीकी उसमें सहायक के रूप में काम करें मालिक के रूप में नहीं। मनुष्य द्वारा प्रकृति, चाँद सितारों और नदियों को टचस्क्रीन के द्वारा न देखा जाय बल्कि अपनी आँखों से उनके असली सौन्दर्य को निहारें, साथ ही आदमी की दुनिया में जो आदमी रहते हैं, उन्हें भी आँखों से देखें। चूँकि टचस्क्रीन से देखे गए आदमी असली नहीं हैं उन्हें महसूस करने के लिए असली दुनिया में जाना होगा, स्क्रीन केवल मायाजाल है।

☆☆☆☆

श्री धीर सिंह, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी,
मुख्यालय सीमा सड़क महानिदेशालय, हिंदी अनुभाग

''अटल नारी– एक वीर विधवा की कहानी''

भोर हुई, जगी फिर से, नई उमंग जगाई,
माथे पे ना सिन्दूर, पर रोशनी मुस्काई।
कलम उठाई, फाइल खोली, दायित्व को निभाया,
बर्फीली रातों में उसने मेहनत का दीप जलाया।

हाथ में कलम, दिल में आग,
सच्चाई के संग, मेहनत के राग।
बर्फीले पर्वत भी झुक जाएं,
जब उसकी ईमानदारी झलक जाए।

घर की अंजोरी, दफ्तर की रौनक,
फिर भी तन्हा, फिर भी मजबूत।
संदेश यही दे, दुनिया को सिखाए,
नारी कभी ना हार मान पाए।

ना मांगती सहारा, ना तकती राह,
हौसले के बल पर खुद को संभाल।
जो विधवा कहे, वो शक्ति की मूरत,
हर कर्म से करती देश की हिफाज़त।

☆☆☆☆

सुश्री शोभा तिवारी, प्रवर श्रेणी लिपिक,
मुख्यालय, हीरक परियोजना

आपका जीवन सुंदर होगा

आजकल देखा जा रहा है कि हम लोग जीवन में बहुत तनाव महसूस करते हैं एवं इस तनाव को दूर करने के लिए तनाव प्रबंधन के नाम से कई सारे परामर्शदाता अपनी दुकानें भी खोलकर बैठे हैं, लेकिन उनकी परामर्श प्रक्रिया को देखकर आप और अधिक तनाव महसूस करेंगे और आपको समझ में नहीं आयेगा कि आप यहां तनाव को दूर करने आये हैं या तनाव को खरीदने आए हैं।

वास्तव में हम सभी की प्रकृति एवं प्रवृत्ति अलग–अलग होती है, इसलिए कोई भी एक सिद्धांत सभी लोगों पर समान रूप से लागू नहीं होता है। हम सभी का एक दूसरों से अलग–अलग होना ही हमारे इंसान होने का लक्षण है। हम इंसान हैं इसलिए सभी एक दूसरे से अलग हैं, मशीनें एक जैसी होती है, इंसान नहीं। इसलिए जीवन जीने के लिए सभी पर कोई भी एक सूत्र या सिद्धांत लागू नहीं होगा।

जीवन को सुंदर बनाने के लिए, दूसरों को बदलना छोड़ दो, खुद को बदलो, आपकी दुनिया अपने आप बदल जाएगी। दूसरों को सिखाना बंद कर दो। किसी को कुछ सिखाने की मूल रूप से कोई आवश्यकता होती ही नहीं है। मनुष्य अपने आप सीखता है। इसके लिए केवल वातावरण बनाने की आवश्यकता होती है। आप अपने बर्ताव एवं व्यवहार से आदर्श निर्माण कर सकते हो जिसका दूसरे लोग अपने आप अनुकरण करने लगेंगे। उन्हें भी लगेगा कि जीवन ऐसा होना चाहिए। जीवन की व्यस्तता में थोड़ा रूककर अपने भीतर झाँककर देखो, जीवन सुंदर हो जाएगा। जीवन को अपनी नजर से देखो।

ले दे कर एक नजर ही तो है हमारे पास,
फिर क्यों देखें दुनिया को किसी और की नजर से

जीवन सुंदर करने के लिए आप ऐसे लोगों की एक सूची बनाओ जिन्होंने आपकी जरूरत के समय मदद की हो एवं दूसरी सूची ऐसे लोगों की बनाओ जिन्हें आपने उनकी जरूरत के समय मदद की हो। जिस दिन आपकी दूसरी सूची प्रथम सूची से बड़ी होगी उस दिन आपका जीवन सुंदर हो जाएगा। दूसरों का जीवन सुंदर करके ही आप अपना जीवन सुंदर कर सकते हो। इसके लिए आपको अपने भीतर झाँकना होगा। खुद को पहचानना होगा। अपनी क्षमता को पहचानना होगा। जिस दिन आप स्वयं की पहचान कर लेंगे, उस दिन आपका जीवन सुंदर हो जाएगा। सचिन तेंदुलकर, लता दीदी, डॉ कलाम सर, जैसे महान लोग सब अलग–अलग थे जिन्होंने स्वयं को पहचाना तथा अपने–अपने व्यक्तित्व में निखार लाकर कर अपने जीवन को सुंदर बनाया।

हमारे पास क्या है, हमें उसकी कोई चिंता नहीं है, हमारे पास क्या नहीं हैं, उसकी बहुत चिंता होती है। उससे भी अधिक चिंता दूसरों के पास क्या है इसकी होती है और इससे स्वयं का जीवन दुःखी कर लेते हैं। अपना सुख भी अपना नहीं रहता और अपना दुःख भी कम नहीं होता। जब तक दूसरों की प्रतिक्रियाओं पर अपना सुख और दुःख निर्भर रहता है तब तक हम अपने जीवन को सुंदर नहीं बना सकते।

संत ज्ञानेश्वर महाराज ने बताया है कि सुख और संतोष आत्मा से संबंधित है। हम सुख को साधनों एवं संसाधनों में तलाश रहे हैं और यहीं से हमारी समस्या शुरू होती है। यदि साधनों में सुख होता तो सारे अमीर व्यक्ति सुखी होते, लेकिन ऐसा नहीं है। सुख और संतोष आत्मा में निहित होता है। यदि हमें खुश रहना है तो हम बहुत खुश रह सकते हैं, लेकिन यदि हम खुश हैं यह दुनिया को दिखाना है, तो हमारा खुश रहना मुश्किल हो जाता है।

जीवन में जितना हम लोगों की मदद करेंगे, दूसरों को कुछ देने का प्रयास करेंगे, उससे अधिक हमें जीवन में

मिलता रहेगा, क्योंकि प्रकृति का नियम यही है। जितना हम दूसरों को कुछ देंगे उतने ही हम जीवन में खुश रहेंगे। जो कमाया है, यहाँ पर ही छोड़कर जाना है, साथ में ना कुछ लाये थे और ना ही कुछ लेकर जाना है। इसलिए धन को अपने उत्तम व्यवहार से जोड़ा जाना चाहिए। अनीति से जोड़ा गया धन जीवन में दुःख का बड़ा कारक बनता है।

प्रत्येक व्यक्ति में कुछ अच्छे एवं कुछ बुरे गुण होते हैं, इसीलिए वह इंसान बना है। आप केवल अच्छे गुणों के साथ जुड़े रहो, आप समाज को थोड़ा देने का प्रयास करो, प्रकृति आपको बहुत कुछ देने को तैयार है। वाणी पर नियंत्रण रखें एवं संयम बनाये रखें। प्रत्येक कार्य का एक निर्धारित समय होता है। किसी की तारीफ करते रहें, किसी की गलती से उसे अकेले में अवगत कराएं। रिश्तों की कीमत को समझें। मरने के बाद लोग नाम तक लेना पसंद नहीं करते। ''डेड बॉडी कहाँ तक पहुंची है'' इस तरह से पूछते हैं। जीवन में जब तक संवेदना है तब तक हम इंसान हैं अन्यथा हम मशीन बनते जा रहे हैं। जीवन सुंदर है, भगवान हमें यह संकेत देते हैं। इंसान ने खुद को दुनिया का सबसे बुद्धिमान प्राणी स्वयं ही घोषित किया है, लेकिन आँखों से न दिखने वाले एक विषाणु के डर से सारी दुनिया को रूकना पड़ा था। इसीलिए प्रकृति के साथ जुड़े रहें आपका जीवन सुंदर होगा।.........................

☆☆☆☆

श्री गुडधे सतिश गणपतराव, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी, पूर्वी आधार कर्मशाला (ग्रेफ)

बीसीए पोस्टिंग

जब से आए थे ग्रेफ में, बीसीए के लिए लगी हुई थी होड़,
मोड़–मोड़ पर मानो लग रही थी, बीसीए की ही दौड़।

मैंने पूछा ये बीसीए क्या है साहब?
दिया जवाब एक वरिष्ठ अनुभवी ने,
बीसीए में मिलती, मोटी रकम है भैय्या,
जीवन–नैय्या पार लगाता यही बनके खिवैय्या।

मैं भी हो गया शामिल इस दौड़ में क्योंकि,
"बाप बड़ा न भैय्या, होता सबसे बड़ा रूपैय्या"।
हाई–आलटीट्यूड, ईएचए के किए बैरियर पार,
और खुल गए मेरे लिए भी बीसीए के द्वार।

पर जब तक आई बारी मेरी, मोटी रकम हो चुकी थी "पतली",
दो साल की थी जो पारी, अब डेढ़ साल की थी होली।

पर धीरे–धीरे होने लगा मुझे अब यह एहसास है,
डेढ़ साल में भी हो जाती इकट्ठी पर्याप्त राशि पास है।
"दंतक" की पोस्टिंग में ये बात सबसे खास है,
यहीं पर होता भारत–भूटान मित्रता का आभास है।

"दंतक" बना रहा यहाँ सड़कों का जाल है,
दोस्ती की कर रहा पेश अनोखी एक मिसाल है।
"दंतक" कर रहा भूटान में विकास है,
"दंतक" भूटानियों के मन का विश्वास है।

अब मैं "दंतक" का हिस्सा हूँ, निश्चय–बल का पक्का हूँ।
"दंतक" मेरा आधार है, "दंतक" को मेरा आभार है।

☆☆☆☆

श्री देवेन्द्र कुमार कौशिक, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी, मुख्यालय दंतक परियोजना

शांति के समान दूसरा तप नहीं है, न संतोष के समान सुख है।

आज का युग हिंदी भाषा का युग

मुझे बहुत गर्व महसूस हो रहा है कि मैं सीमा सड़क संगठन में कार्य कर रहा हूँ। हमारे विभाग ने राजभाषा हिंदी को अपने कार्यालयीन कार्यों में बहुत अधिक मात्रा में अपनाया है। हमारे विभाग के उच्च मुख्यालयों से लेकर प्लाटून स्तर तक हिंदी में कार्य किए जा रहे हैं। पिछले कुछ वर्षों को देखें व वर्तमान में देखें तो अपने विभाग में हिंदी में कार्य करने में काफी तेजी आयी है, इसका मतलब सीमा सड़क संगठन में राजभाषा हिंदी को ज्यादा महत्व दिया जा रहा है।

हमारे देश में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा हमारी राजभाषा हिंदी है। हिंदी भाषा बहुत ही सरल भाषा है। यह एक आम बोल–चाल की भाषा है, जिसे लगभग हर एक भारतीय पढ़ता है, बोलता है और समझता है। हम सब को पता है कि भारत में बहुत प्रकार की भाषाएं बोली जाती हैं। प्रत्येक राज्य में अलग–अलग भाषाएं हैं। लेकिन जब हम अपने गृह राज्य से दूसरे राज्य में जाते हैं तो सर्वप्रथम पहली बोली हिंदी में ही बोलते हैं। हम सब को मालूम है कि हमारे प्रधानमंत्री जी जब बाहरी देशों की यात्रा पर जाते हैं तो वहाँ पर हमारे प्रधानमंत्री जी हिंदी में ही सभा को संबोधित करते हैं। जब हमारे प्रधानमंत्री बाहरी देशों में जाकर हिंदी में बोल सकते हैं, तो हम अपने कार्यालयीन कार्यों को बढ़ावा क्यों नहीं दे सकते? हमारे देश के भू–भाग में बोली जाने वाली भाषा 'हिंदी' राजभाषा के पद पर आसीन होने की अधिकारिणी भी है।

हमारे संगठन ने सड़कों, सेतु, विमान पट्टियों एवं टनल बनाने जैसे महान कार्य किये हैं जिसमें खास बात यह है कि वहाँ पर सभी बोर्ड/सूचना पट्ट तथा स्लोगन हिंदी में ही लिखे गये हैं। यदि आपको कभी लेह–लद्दाख जाने का मौका मिले तो वहाँ सड़कों पर लगाए गए बोर्ड में हिंदी स्लोगन काफी रोचक होते हैं जिसे पढ़ते–पढ़ते सफर का पता ही नहीं चलता है। इसका श्रेय वहाँ पर तैनात परियोजनाओं को जाता है, उनकी जितनी सराहना की जाए उतनी कम होगी। आज देश के सभी सरकारी कार्यालयों में हिंदी में कार्य करने को बढ़ावा मिला है जो सराहनीय है। मुझे लगता है कि आने वाले कुछ वर्षों में हिंदी भाषा का सभी सरकारी विभागों में बोलबाला दिखाई देगा।

आज भारतीय संस्कृति को बाहरी देशों के नागरिकों द्वारा बहुत अधिक मात्रा में अपनाया जा रहा है। इसके साथ–साथ हिंदी भाषा बोलने में अपनी रूचि दिखाते हुए हिंदी में ही बात–चीत करने का प्रयास भी करते हैं, कई लोग तो हमारी आस्था से संबंधित भक्ति गीत भी गाते हैं। यह देखकर मुझे अपने भारतीय होने का गर्व होता है।

हिंदी से एकता, एकता से हम।

✩✩✩✩

श्री सपकाले अजय एस, हिंदी टंकक, मु0 44 सीमा सड़क कृतिक बल/ब्रहमांक परियोजना

दुनिया की तीसरी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है।
वैश्विक मंच पर छा जाए यह सबकी अभिलाषा है।।

दोस्ती

वो भी क्या दिन थे,
चार बजने का इंतजार पूरे दिन रहता था,
क्यूँकि चार बजे खेलने को जो जा पाती थी।
अपने दोस्तों के साथ पूरे दिन की चर्चा करती थी।
पंचायत लगाते थे हम सात लोग,
जिसके मुखिया या प्रधान हम सातों ही थे।
बातों में घुल जाती थीं खुशियाँ, गमों को वहां मरहम लगाती थी।

आखिर वह गम थे ही क्या?
वंश ने पेंसिल बॉक्स चुराया, अमित ने की मुझसे खूब लड़ाई।
रिया ने पागल कहकर चिढ़ाया, अपर्णा ने मुझसे आंख न लड़ाई।
चाहे वह गम कुछ भी क्यों न हो,
दूसरों की खुशियों को सुनते–सुनते, अपने घाव तो मिट ही जाते थे।

साढ़े पाँच बजने का खौफ चार बजे से ही रहता था,
क्योंकि खेल–कूद का समय, डेढ़ घंटा जो निर्धारित था।
उस समय चारों ओर मातम छा जाता था, जैसे स्नो–वाईट अपने छोटे दोस्तों को छोड़
अपने राजकुमार के संग चली जाती थी, ठीक उसी प्रकार हमारी मम्मियाँ,
हमें अपनी जानों से अलग कर, अपने साथ ले जाती थीं।

ये सब लिखते वक्त, दिल में पत्थर सा पिघल रहा है,
न जाने क्यों जिंदगी ऐसी हो गई है।
चाहे चार बजे या छह, हर पल घड़ी की सुईयाँ तो आगे बढ़ती हैं।
मगर हमारा ध्यान तब एक ही जगह टिका रहता था,
जी हाँ, आपने एकदम ठीक ही समझा, घर–परिवारों में भेद–भाव किए बिना,
बंधनों को देखते ही उसे चकना–चूर करने की चाह,
जिसे जासूस के सिवाय और कोई नाम नहीं दिया जा सकता।

यह मोबाईल फोन ही है,
जिसने मनुष्य के जीवन को ऐसा बना दिया
जहाँ हम अपने मित्रों से, अपने घरवालों से भी रिश्ता नहीं रखते।
बचपन की वह यादें, बस यादों में ही समा गई,
न कोई समय न कोई भूख मोबाइल मिला तो सब मिला
न जाने कब सुधरेंगे हम।

दोस्ती की डोर में आ गई राहों को मिटाने के लिए
आओ, गिले शिकवे भूलकर नए सपने सजाएं।

✰✰✰✰

सुश्री स्वाती एस, पुत्री शैलेन्द्र कुमार आर, कार्यालय अधीक्षक,
मु. 44 सीमा सड़क कृतिक बल, ब्रह्मांक परियोजना

उदय और प्रकाश

हर भोर सूरज ऊपर आए,
सोने की किरणें जग में छाएं।
धरती जागे, नई बने,
रंग–बिरंगी रोशनी तने।।

पहाड़ खड़े शान से ऊँचे,
आकाश से बातें करें सच्चे,
नदियाँ नाचे बेखौफ धार,
प्रकृति के संग करे प्यार।।

हाथ में गूँजे शक्ति की तान,
कोमल मगर सोने समान।
वृक्ष खड़े, जड़ें गहरी,
समय के संग वचन रहे भारी।।

गरूड़ के जैसे उड़ूँ मैं भी,
लहरों संग मिलूँ कभी।
सपने मेरे हौसला बड़ा,
दिल में आग, गर्व से खड़ा।।

कोई आँधी मुझे रोक न पाए,
अंधेरा भी रोशनी को न खाए।
क्योंकि जन्म लिया मैंने
कुछ कर दिखाने,
अपना नाम अमर बनाने।।

✰✰✰✰

श्रीमती सुरभि कुमारी,
पत्नी श्री राजीव रंजन पटेल,
प्रवर श्रेणी लिपिक,
मुख्यालय हीरक परियोजना

मानव जाति को एकता का पाठ चींटियों से सीखना चाहिए।

सुनने को महत्व दें, जजमेंटल न बनें

हम सभी अच्छे वक्ता हो सकते हैं, लेकिन क्या हम अच्छे श्रोता भी हैं? एक आदर्श बातचीत केवल हमारे बोलने की क्षमता और अपनी बात समझाने तक ही सीमित नहीं होती है, उससे भी महत्वपूर्ण है दूसरों को ध्यान से सुनना। सुनने से हम लोगों के इरादों को पहचान सकते हैं, मुद्दों को सुलझा सकते हैं और मजबूत संबंध बना सकते हैं। क्या आप अक्सर स्वयं को अधिक बोलते हुए पाते हैं और दूसरों को कम सुनते हैं? क्या आप मानसिक रूप से प्रतिक्रिया तैयार करना शुरू कर देते हैं, जबकि दूसरा व्यक्ति बोल रहा होता है? क्या किसी पॉइंट पर आपकी राय अलग होने पर, आप दूसरों को बीच में ही रोक देते हैं? "हमारे पास दो कान लेकिन मुंह एक ही है, इसलिए हमें बोलने से ज्यादा सुनना चाहिए" – यह एक सामान्य कथन है। लेकिन उम्र, पद, भूमिका और जिम्मेदारियों के बढ़ने के साथ, हम सुनने की कला को खोते जा रहे हैं। हम सामने वाले के शब्द तो सुनते हैं, लेकिन हमारा मन अंदर ही अंदर, उनके शब्दों पर जजमेंट देना शुरू कर देता है और प्रतिक्रिया तैयार करने लगता है। चूंकि हमारा मन बात कर रहा है, ऐसे में हम सचमुच में सुन नहीं रहे होते, बल्कि अस्वीकृति की ऊर्जा फैला रहे होते हैं। सुनने का असली अर्थ है; अपने मन को शांत करना। ये समझना कि सामने वाले की राय अलग हो सकती है, अपनी राय से अलग होकर उनके दृष्टिकोण को सम्मान देना और उनकी बातों को स्वीकार करना। साथ ही, बाहरी या भीतरी तौर पर अपने ध्यान को न भटकने दें। सामने वाले की बातें सुनें, चिंतन करें और फिर अपनी बात रखें। पूरे मन से उनकी बात सुनें, अगर वे गलत लगें तो ही अपनी राय अलग से रखें।

संबंधों को बेहतर बनाने के लिए सुनने की कला को अपनाएं। जब कोई बोल रहा हो तो ध्यान से सुनें। फोन, टीवी या कंप्यूटर जैसी चीजों से ध्यान हटाएं और सामने वाले की आंखों से संपर्क बनाए रखें। उनके व्यक्तित्व, उच्चारण या भाषा पर ध्यान न दें बल्कि हर शब्द को गौर से सुनें। उनकी ऊर्जा को महसूस करें, वे जैसे हैं उन्हें वैसे ही समझें। उन्हें बीच में न रोकें और अपनी बारी का इंतजार करें। शांत और धैर्यता से सुनें, सुनिश्चित करें कि लोग आपसे बात करने में सहज महसूस करें। अच्छे श्रोता बनने के लिए समझें कि वे क्या कह रहे हैं, क्या चाहते हैं? यदि आपके पास प्रश्न हों, तो उनकी बात पूरी होने तक प्रतीक्षा करें और शालीनता से पूछें। यह आपकी बातचीत को सामंजस्यपूर्ण, पारदर्शी और शांतिपूर्ण बनाएगा और हर बातचीत को आपके और दूसरे व्यक्ति के लिए एक सुखद अनुभव बना देगा।

☆☆☆☆

श्री राम निवास कस्वाँ, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी, मुख्यालय उदयक परियोजना

भाषा और राष्ट्र में बड़ा घनिष्ट संबंध है।

– (राजा) राधिकारमण प्रसाद सिंह

कर्तव्य का पालन ही चित्त की शांति का मूल मंत्र है।

दुनिया को बदलने में महिलाओं की भूमिका

महिलाओं को कई खूबसूरत गुण और शक्तियां मिली हुई हैं, जो उन्हें दुनिया में सर्वोच्च बनाती हैं। ईश्वर उनके इन गुणों को बहुत पसंद करते हैं और नई दुनिया बनाने के लिए इनका उपयोग करते हैं। आने वाली दुनिया पवित्रता, शांति, प्यार और खुशी से भरी होगी। महिलाएं इस नई दुनिया को बनाने में क्यों सफल होती हैं? आइए, इन गुणों को समझें और अपनाएं :–

1. **निःस्वार्थ प्रेम**– महिला निःस्वार्थ प्रेम का स्रोत है, जो बिना किसी शर्त और उम्मीद के दिया जाता है। जब दुनिया में सभी आत्माएं अपनी खुशी और आंतरिक सुंदरता खो देती हैं तो इस निःस्वार्थ प्रेम से वे पुनः खिल उठती हैं और ईश्वर द्वारा बनाई जाने वाली नई दुनिया के लिए तैयार हो जाती हैं।

2. **विनम्रता**– आंतरिक रूप से सुंदर महिला वह है, जिसने अपने अहंकार को पूरी तरह त्याग दिया है और खुद को परमात्मा और उनके कार्य के लिए समर्पित कर दिया है। भगवान महिलाओं को एक साधन के रूप में उपयोग करके हर आत्मा को शुद्ध और पूर्ण बनाते हैं और उनकी मदद से सभी आत्माओं के कठिन और नकारात्मक संस्कार भी बदलते हैं।

3. **सहनशीलता**– महिलाएं सहनशीलता का प्रतीक हैं। वे विश्व को बदलने हेतु ईश्वरीय कार्य में आने वाली किसी भी बाधा का सामना करने के लिए तैयार रहती हैं। जरूरत पड़ने पर वे आगे रहती हैं और बाकी समय पर झुक भी जाती है, क्योंकि वे हर परिस्थिति के अनुसार ढलने की कला जानती हैं।

4. **सेवा का गहरा भाव**– महिलाएं जितनी अधिक सेवा करती हैं, उतना ही वे स्वयं को ईश्वर के समीप ले जाती हैं और आशीर्वाद प्राप्त करती हैं। भगवान उनका उपयोग दुनिया तक पहुंचने और पूरी पृथ्वी को स्वर्ग बनाने के लिए करते हैं।

5. **आनंदमय और शांतिपूर्ण**– ईश्वर ने महिलाओं को ही दुनिया और प्रकृति को शुद्ध करने के लिए चुना है, क्योंकि वे भगवान से जुड़े रहने के कारण शांति और आनंद से भरपूर होती हैं। और यही ऊर्जा उनके माध्यम से हर आत्मा और हर जीवित और भौतिक चीज़ में प्रवाहित होती है और उसे नया रूप देती हैं।

6. **मासूमियत**– महिलाएं मासूमियत से भरी हुई होती हैं और वे परमात्मा की मासूमियत का प्रतिबिंब हैं। वे ईश्वर के प्रति प्रेम से उनका दिल जीत लेती हैं और यही प्रेम दूसरों को भी बांटती हैं। इससे अन्य लोग भी भगवान के करीब आते हैं और उनके दिव्य प्रेम को अनुभव कर अपने में सकारात्मक बदलाव लाते हैं।

☆☆☆☆

श्री बोरसे प्रदीप विक्रम, प्रवर श्रेणी लिपिक, मुख्यालय उदयक परियोजना

हमारी राष्ट्रभाषा का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीयता का दृढ़ निर्माण है।
– चंद्रबली पांडेय

"आओ हिंदी में काम करें"

आओ हिंदी में काम करें, हिंदी का ना अपमान करें।
हिंदी है हिंदुस्तान की भाषा, हिंदी में अपनी पहचान करें।

हिंदी है हिंदुस्तान की भाषा, हिंदी का सम्मान करो।
अंग्रेजी में तुम पटपट बोलो, ना हिंदी का अपमान करो।

गर्व से तुम हिंदी बोलो, हिंदी में सब काम करो!
जहां जरूरत हो अंग्रेजी की, वहाँ पटपट बोलो और देश का नाम करो।

अंग्रेजी भाषा भी अच्छी है, अंग्रेजी का भी सम्मान करो।
हिंदी है हिंदुस्तान की भाषा, हिंदी का ना अपमान करो।

कार्यालय या विद्यालय हो, ज्यादा से ज्यादा हिंदी लिखो और बोलो तुम।
हिंदुस्तान की हिंदी भाषा को कभी ना होने देना गुम।

हिंदी से पहचान हम सब की, हम सब है दिल से हिंदुस्तानी।
हिंदी में मिलजुल कर काम करेंगे, नहीं चलेगी अंग्रेजी की मनमानी।

अंग्रेजी पढ़ना मजबूरी है तो हिंदी भी बहुत जरूरी है।
माना अंग्रेजी से सम्मान मिलेगा तो हिंदी से पहचान बनेगी!

अभी तुम बच्चे को हिंदी से इतना दूर भगाते हो।
बच्चा मेरा ना बोले हिंदी, इंग्लिश मीडियम में पढ़ाते हो।

अभी समय है बच्चे को कुछ हिंदी सिखला दो।
बदलती दुनिया का फैशन छोड़ो, अभी भी हिंदी अपना लो।

बड़ी शर्म की बात है हिंदी बोलने में जो शरमाते हैं।
टूटी फूटी अंग्रेजी बोलकर अपना अभिमान दिखलाते हैं।

फिर कहते हैं हिंदी भाषा को शिखर तक हम पहुंचाएंगे।
जब लिखते ये खुद हिंदी तो पूछते हिंदी में बिंदी कहाँ लगायेंगे।

आओ हिंदी में काम करें हिंदी का ना अपमान करें।
हिंदी है हिंदुस्तान की भाषा हिंदी में अपनी पहचान करें।

☆☆☆☆

श्री अजय कुमार, मार्गदर्शक, 1581 मार्गदर्शक इकाई (ग्रेफ),
48 सीमा सड़क कृतिक बल

देश का जवान

एक वीर था सरहद उस पार।
जिसमें था जुनून।।

एक वीर था उसी सरहद पर।
जिसमें था सुकून।।

सुकून था उसकी साँसो में।
शहीद हुआ वो देश की खातिर।।

आँसू थे उसकी आँखों में।
परिवार के लिए न होगा वो हाजिर।।

एक नन्ही बिटिया आँगन में।
देख रही थी उसकी राह।।

देख तिरंगे में लिपटा उसको।
मुँह से निकली उसकी आह।।

नहीं रहा वो इस दुनिया में।
शहीद हो गया देश की खातिर।।

अब उंगली पकड़कर किसकी चलूंगी।
बतलाओ ये मुझको आखिर।।

कहाँ से पाएं प्यार वो नन्ही।
खेलती थी वो गोद में जिसके।।

माँ का प्यार पिता की उंगली।
पकड़ चला था जिस वो राह।।

लिपट तिरंगे में ले कंधे पर।
मुँह से निकले उसके आह।।

☆☆☆☆

श्रीमती रमिन्द्र, अवर श्रेणी लिपिक,
मुख्यालय हिमांक परियोजना

कृतज्ञता मित्रता को चिरस्थायी रखती है और नए मित्र बनाती है।

नारी और राष्ट्र

पढ़ा यही मैंने बचपन से
नारी राष्ट्र की ताकत है,
पर आज़ादी के इतने वर्षों बाद,
आज भी उसकी क्या हालत है!!
बढ़ते जा रहे नवयुग की ओर,
फिर भी संकीर्ण मानसिकता के रोगी,
उसकी इस दशा के हम ही दोषी!!

क्या ऐसे राष्ट्र बना करते हैं?
मिलकर एक साथ सब कदम बढ़ाएं।
आओ ऐसा राष्ट्र बनाएं,
अंधियारों में खोई, शोषण से जकड़ी,
हर नारी को आज़ाद कराएं।
घोट गला अरमानों का, पिसती रही जो घर में,
हर उस नारी को सम्मान दिलाएं
आओ ऐसा राष्ट्र बनाएं......

बातें बहुत हो चुकीं,
चलो उनके जज्बों में फिर से स्वाभिमान की आग जलाएं
हो आज़ादी उन्हें भी सपने संजोने की,
चलो रिवाज़ की सांकल से उनको मुक्त कराएं।।
आओ ऐसा राष्ट्र बनाएं......

हंसती खेलती हर घर में हो एक लड़की,
चलो अपनी ऐसी सोच बनाएं।।
न हों कभी फिर भ्रूण हत्याएं,
इसके लिए खुद को तैयार बनाएं
आओ ऐसा राष्ट्र बनाएं......

आकाश से ऊँची उस माता को,
ममता उसकी वापस दिलाएं खत्म करें भय उसके दिल से,
उसको निर्भीकता से जीना सिखलाएं....
मिलकर एक साथ सब कदम बढ़ाएं...
आओ ऐसा राष्ट्र बनाएं....

✯✯✯✯

श्री कपिल त्यागी, वरिष्ठ लेखा परीक्षक लेखा कार्यालय
19 कृ. बल, दंतक

हाँ! वो सिपाही है

खुद मुश्किलों से लड़कर
हमारी जिंदगी आसान करता है,
वो अपनी जिंदगी वतन पर कुर्बान करता है,
हाँ! वो सिपाही है।

दीपावली हो या ईद
वो सरहद पर ही मिलता है,
खून की होली खेलकर,
हमारा दामन खुशियों से भरता है,

हाँ! वो सिपाही है।
जंग की बात सुनकर माँ की
आँखें भर सी जाती हैं,
उसे भी अपने घर की याद
जरूर सताती है,
हाँ! वो सिपाही है।

हर मुश्किल से लड़कर देश को बचाता है.
भूख–प्यास सब भूलकर
दुश्मन को धूल चटाता है।
हाँ! वो सिपाही है।

आन–शान फिर नींद उड़ गई
यह सोचकर कि सरहद पे बहा खून
मेरी नींद के लिए था,
बस यही सोचकर उससे सोया नहीं जाता है!
हाँ! वो सिपाही है।
अपनों की याद में उससे रोया नहीं जाता है।
हाँ! वो सिपाही है।

✯✯✯✯

श्री अरून कुमार, हिन्दी टंकक, 753 सी.स.कृ.ब.,
हिमांक परियोजना

क्षमा तपस्वियों का भूषण है।

''एक पेड़ माँ के नाम'' – प्रकृति को समर्पित मातृ प्रेम

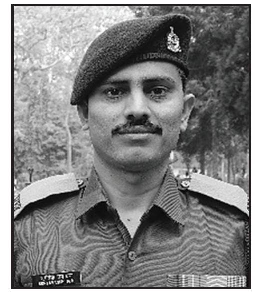

''एक पेड़ माँ के नाम'' एक अनोखी पहल है जो पर्यावरण संरक्षण और मातृ प्रेम को एक सुंदर संयोजन में पिरोती है। इस पहल के तहत लोग अपनी माताओं के सम्मान में वृक्षारोपण करते हैं। यह केवल एक पेड़ लगाने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि मानव और प्रकृति के बीच एक गहरा संबंध स्थापित करने का प्रयास है।

वृक्ष हमारे पर्यावरण के अभिन्न अंग हैं। वे हमें ऑक्सीजन प्रदान करते हैं, वायु को शुद्ध करते हैं, छाया देते हैं और अनेक जीवों के लिए आश्रय स्थल का काम करते हैं। जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने में भी वृक्ष महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करके वायुमंडल में कार्बन की मात्रा को कम करते हैं और जलवायु को स्थिर रखते हैं। ''एक पेड़ माँ के नाम'' पहल के माध्यम से व्यक्ति अपनी माता के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए पर्यावरण संरक्षण में अपना योगदान देता है।

इस पहल में वृक्षारोपण केवल एक कर्म नहीं है, बल्कि एक भावना है। माँ के नाम पर लगाया गया वृक्ष उनके अपार स्नेह का जीवंत प्रतीक बन जाता है। जैसे–जैसे वृक्ष फलता–फूलता है, वैसे–वैसे माँ का स्नेह भी सदैव जीवंत बना रहता है।

''एक पेड़ माँ के नाम'' पर्यावरण शिक्षा और जागरूकता को बढ़ावा देने का एक प्रभावी माध्यम भी हो सकता है। इस पहल में बच्चों को शामिल करके हम उनमें पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी की भावना पैदा कर सकते हैं। वृक्षारोपण और उसकी देखभाल करना बच्चों को पर्यावरणीय संरक्षण के महत्व और सभी जीवित प्राणियों के परस्पर संबंध के बारे में समझने में मदद करता है। यह उन्हें पारिस्थितिक तंत्र के नाजुक संतुलन को समझने और पर्यावरण संरक्षण के प्रयासों में सक्रिय भागीदार बनने के लिए प्रोत्साहित करता है।

इसके अलावा, यह पहल सामुदायिक विकास और सामाजिक एकता में भी योगदान दे सकती है। सामुदायिक वृक्षारोपण अभियानों के माध्यम से ''एक पेड़ माँ के नाम'' लोगों को एक साथ ला सकता है और पर्यावरण के प्रति साझा उद्देश्य और सामूहिक जिम्मेदारी की भावना को बढ़ावा दे सकता है। ये आयोजन पर्यावरणीय मुद्दों के बारे में जागरूकता बढ़ाने और समुदाय के भीतर स्थायी प्रथाओं को बढ़ावा देने के मंच के रूप में भी कार्य कर सकते हैं।

निष्कर्ष – ''एक पेड़ माँ के नाम'' एक सुंदर और सार्थक पहल है जो पर्यावरण संरक्षण और मातृ प्रेम को एक साथ जोड़ती है। अपनी माताओं के सम्मान में वृक्षारोपण करके व्यक्ति पर्यावरण के लिए महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है और साथ ही अपने जीवन में माताओं की अमूल्य भूमिका का सम्मान कर सकता है। इस पहल में प्रकृति के साथ गहरा संबंध स्थापित करने, पर्यावरणीय संरक्षण को बढ़ावा देने और सामुदायिक विकास को प्रोत्साहित करने की क्षमता है। आइए हम ''एक पेड़ माँ के नाम'' के लक्ष्य को अपनाएं और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक हरित, स्वस्थ और अधिक टिकाऊ भविष्य के निर्माण में योगदान दें।

✯✯✯✯

श्री सूर्यवंशी मोतीलाल नारायण, मार्गदर्शक, 1642 मार्गदर्शक इकाई (ग्रेफ)/15 सीमा सड़क कृतिक बल/ सेवक परियोजना

भाषा विचार की पोशाक है।

– डॉ. जानसन

मन

मनुष्य का मन विभिन्न कृत्यों को देखकर भटकता रहता है, कभी उसके मन की चेष्टा ख़त्म नहीं होती। एक वस्तु पाकर भी मन दूसरे की लालसा और उससे अच्छे की तरफ भागता रहता है। मन एक जगह पर टिकने वालों में से नहीं है। संसार में मन की गति सबसे तीव्र मानी गयी है। मन को बस में भी किया जा सकता है, जिसे मैं एक कहानी के माध्यम से आपको समझाता हूँ।

एक महात्मा जी घने जंगल में गाँव से दूर शांत जगह पर कुटिया बनाकर नदी किनारे रहते थे, महात्मा जी नित–प्रतिदिन सुबह जल्दी उठकर अपनी दिनचर्या से निवृत होकर भगवान की आराधना किया करते थे। महात्मा जी बहुत ही उज्ज्वल प्रवृत्ति के संत थे।

एक दिन संध्या समय में महात्मा जी के मन में खीर खाने की चेष्टा जागी और वे सारी रात वही सोचते रहे कैसे सुबह खीर खाई जाए। किसी काम को करते तो उनका मन उसी खीर की कामना करने लगता। अगले दिन सुबह जल्दी उठकर महात्मा जी पूजा अर्चना करने के बाद गाँव में गए और गाँव से चावल, दूध, मेवा, चीनी इत्यादि खीर बनाने के लिए सब कुछ मांग कर ले आये।

आज उनका मन सिर्फ खीर खाने को कर रहा था। महात्मा जी अपनी कुटिया में वापस आते हैं और खीर बनाने की तैयारी करते हैं। उन्होंने चूल्हा जलाया, खीर बनाने रखी। उसमे दूध चावल, चीनी, विभिन्न प्रकार की मेवा डाली। खीर की सुगंध जंगल में दूर–दूर तक फैल रही थी। उनका मन और अधिक खीर खाने को व्याकुल हो रहा था, महात्मा जी ने बहुत ही अच्छी खीर बनाई थी।

खीर खाने के लिए थाली में परोसी और भगवान को भोग लगाया। उनके मन ने भगवान की आराधना से ज्यादा खीर खाने के लिए व्याकुल कर दिया। इस बात से महात्मा जी को क्रोध आ गया और महात्मा जी उठे और कुटिया के बाहर गए और बाहर से गोबर लेकर आये और उस खीर में डाल दिया। गोबर की बदबू उस खीर की खुशबू को दबा चुकी थी। मन में अब खीर की तरफ देखने की भी इच्छा न थी और अब उस मन में खीर को खाने की इच्छा बिल्कुल ख़त्म हो गई थी। महात्मा जी ने अपने मन को उस खीर को खाने के लिए कहा तो उनका मन खीर से हट चुका था और महात्मा जी ने अपने मन को बस में कर लिया था।

इस कहानी के माध्यम से महात्मा जी आज के युग को संदेश देते हैं कि अपने मन को काबू करना सीखें और विभिन्न प्रकार की चेष्टाओं से मन को काबू में रखें। जितनी अधिक जरूरतें होंगी, उतनी ही परेशानियों का सामना करना पड़ेगा।

★★★★

श्री अनोज कुमार, हिंदी टंकक, मुख्यालय 764 सीमा सड़क कृतिक बल/स्वास्तिक परियोजना

हिंदी विश्व की महान भाषा है।

– राहुल सांकृत्यायन

धन–संग्रह की अपेक्षा तपस्या का संग्रह श्रेष्ठ है।

प्रयत्न

पृथक सी वाणी मेरी, अंतरिक्ष भी गूंजता
कर्मों से दैत्य सा, तभी स्वयं से जूझता
अंधकार जो कि बस चुका है रक्त में
हलाल वो, इस कलम को जो है भूलता
अब तो काफिलों को चुभने वाले शूल भी
अगर न कुछ बनूं तो बनना चाहूं धूल भी
अकेले बढ़ने की थी मेरी रज़ा नहीं
अगर मैं मंद हूँ तो मेरी होगी भूल ही
मेरी कल्पना की खुशबू मेरे अक्षरों में
है दर्द भरा मेरे सपनों के फासलों में
है जोश भरा मेरे आसमां से हौसलों में
तलाशे तुम तो इसमें मेरा ही तो दोष क्यों है
हां चोट खा के यहां संभलने वाली बात है
नसीब काला तो उजाले वाली बात है
अपने सपनों का दोष, मैं देता न किसी को
शुरु कलम से की और न अंत तक कलम रुकी ये
याचना नहीं फिर भी यहां प्रथम खड़ा
कई बार रहा मांन कई बार तो जतन बड़ा
छद्म सारी मोह माया जो भी खड़ी सामने
कभी देती दुख, कभी करती है हैरान ये
मान ले वो करूंगा जो भी मैंने ठान लिया
हर एक गुरु से मैंने बहुत सारा ज्ञान लिया
एक–एक तिनके को जोड़ के सम्मान किया
और धीरे–धीरे करके ये रास्ता निमार्ण किया
प्रयत्न जो किया उसका फल भी आयेगा
बीज जो है बोया कौन उसे मिटायेगा
है विपत्ति सामने तो उसका हल भी आयेगा
अगर साधना हो भागीरथ सी गंगाजल बरसायेगा।

☆☆☆☆

श्री अमन गौड़, आशुलिपिक "ए",117 आर सी सी

गुंजन

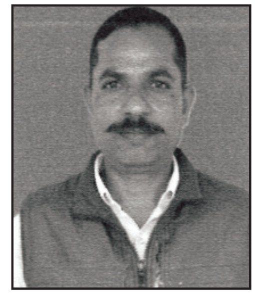

ऐ गुंजन! तू गूँज गयी,

जैसे कलियों पर भौरों की,
मदमस्त बहारें आती हैं।
वैसे ही, तू मेरे हिय को,
रस घोल के भंग पिलाती है।

तू चन्द्रमुखी है सौम्य बदन,
लट जैसे मेघाच्छादित हो।
कंदर्प कटि हरि अक्षि लिए,
नैनन की तीर चलाती हो।

तू चलती सर्पों की गति सी,
फूलों से हँसना तू पायी।
कलियों से सीखा शर्माना।
भौरों से सीखा इठलाना।

तू बोले तो तरंग उठे।
जैसे सागर में लहर उठे।
ऐसी मदमस्त गुंजारन को,
"सागर" लहरों में छिपाती है।

ऐ गुंजन! तू गूँज गयी।

☆☆☆☆

श्री ज्ञान सागर शुक्ल, प्रवर श्रेणी लिपिक,
मुख्यालय ब्रह्मांक परियोजना

मेहनत और कर्म

मनुष्य के जीवन में सफलता का आधार उसकी मेहनत और सही दिशा में किए गए कर्म हैं। मेहनत वह साधन है, जो हमारे सपनों को साकार करने में सहायक होती है, और कर्म वह प्रक्रिया है जो हमें अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों की ओर प्रेरित करती है। मेहनत और कर्म का तालमेल ही वह सूत्र है, जो व्यक्ति को न केवल सफलता दिलाता है बल्कि उसे सच्चा आत्मसंतोष भी प्रदान करता है।

❖ मेहनत का महत्व

मेहनत का अर्थ है किसी कार्य को पूरे उत्साह और लगन के साथ करना। यह वह शक्ति है जो असंभव को भी संभव बना देती है। मेहनत का महत्व इतिहास में दर्ज हर महान व्यक्ति की कहानी में देखा जा सकता है। जैसे कि अब्राहम लिंकन ने अपने जीवन में कठिन परिश्रम करके खुद को एक साधारण व्यक्ति से अमेरिका के राष्ट्रपति पद तक पहुंचाया। मेहनत के बिना न तो कोई लक्ष्य हासिल किया जा सकता है और न ही कोई स्थायी सफलता पाई जा सकती है।

❖ कर्म की परिभाषा और महत्व

कर्म का अर्थ है सही दिशा में कार्य करना। यह न केवल शारीरिक श्रम को शामिल करता है, बल्कि मानसिक और नैतिक जिम्मेदारियों को भी दर्शाता है। भगवद्गीता में श्रीकृष्ण ने कहा है. "कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन''। अर्थात, मनुष्य को फल की चिंता किए बिना केवल कर्म करने का अधिकार है। यह सिद्धांत सिखाता है कि हमें अपने कर्तव्यों को ईमानदारी और निष्ठा के साथ निभाना चाहिए।

❖ मेहनत और कर्म का तालमेल

जब मेहनत और कर्म साथ–साथ चलते हैं तो परिणाम अद्भुत होते हैं। सही दिशा के बिना मेहनत व्यर्थ हो सकती है और कर्म बिना मेहनत अधूरी रहती है। दोनों का संतुलन बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है। यदि हम मेहनत को सही कर्मों के साथ जोड़ दें तो सफलता और संतोष दोनों प्राप्त होते हैं। उदाहरण के लिए, एक किसान खेत में मेहनत करता है, लेकिन अगर वह सही समय पर फसल न बोए या उसकी देखभाल न करे तो उसकी मेहनत व्यर्थ हो जाएगी।

❖ तालमेल कैसे बनाए रखें?

(क) लक्ष्य तय करें – मेहनत और कर्म के बीच तालमेल बनाने के लिए सबसे पहले एक स्पष्ट लक्ष्य तय करें।

(ख) सही योजना बनाएं – कार्य को पूरा करने के लिए सही योजना बनाएं।

(ग) समय का प्रबंधन – समय का सही उपयोग करें और काम को प्राथमिकता दें।

(घ) लगन और समर्पण – मेहनत और कर्म दोनों में लगन और समर्पण का होना जरूरी है।

(ङ) सकारात्मक सोच – सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ें और असफलताओं से सीखें।

❖ निष्कर्ष

मेहनत और कर्म का तालमेल ही जीवन की सच्ची कुंजी है। यह न केवल सफलता दिलाने में मदद करता है, बल्कि हमें जीवन में संतोष और खुशी भी प्रदान करता है। हमें हमेशा यह याद रखना चाहिए कि मेहनत और कर्म दोनों को एक साथ अपनाने से ही हम अपने जीवन को सार्थक बना सकते हैं।

"मेहनत करते रहिए और सही दिशा में कर्म करते जाइए, सफलता आपके कदम चूमेगी।"

"मेहनत और कर्म ही सफलता की कुंजी हैं, जो सपनों को हकीकत में बदलते हैं।"

☆☆☆☆

श्री धर्मेन्द्र, हिन्दी टंकक, मुख्यालय 13 सीमा सडक कृतिक बल, योजक परियोजना

''ऐ ग़र्मी''

ऐ ग़र्मी! फिर से क्यों आई?
जेठ की दुपहरी में कलेजा जलाई!
न कूलर काम करे, न पंखा चले,
तेरे सितम के आगे सब हिम्मत हारे!
पसीना टपके जैसे नल से पानी,
छाँव भी लगे जैसे हो दुश्मनी!
एसी, फ्रिज, सब फेल हो जाई,
तेरी लपट से न कोई बच पाई!
गली में निकलें तो धरती दहके,
ऊपर से सूरज अंगारे फेंके!
चाय भी ठंडी, मन भी झुलसा,
तू आई तो जैसे सब कुछ ही बुझा!
हवा भी तुम से डर–डर भागे,
तालाब, नदी सब तुम से सूखे!
ग़र्मी के आगे बादल भी रोए,
धरती प्यासी, अम्बर भी खोए!
कपड़ा बदलो, तो भीगा निकले,
घर से बाहर, तो अंगारे मिले!
छत पे जाओ, तो तलवा जले,
सिर पे सूरज तंदूर से धले!
राजीव रंजन पटेल भी है हैरान,
गर्मी करे जीना सुनसान!
सत्तू–गुड़ भी साथ छोड़ दे,
गन्ने का रस भी चीनी मांग ले!
ऐ ग़र्मी! अब तो रहम कर,
घटाओं से कुछ बात कर!
एक बूंद बरसा, कुछ तो दया कर,
नया सावन भेज, थोड़ा करम कर!

☆☆☆☆

श्री राजीव रंजन पटेल, प्रवर श्रेणी लिपिक,
मुख्यालय हीरक परियोजना

बॉर्डर रोड ऑर्गनाइजेशन, भारत की शान

ऊंचे पर्वतों में जो सड़कों का निर्माण करते हैं,
धरती को आकाश से जोड़ने का जुनून भरते हैं।
बॉर्डर रोड ऑर्गेनाइजेशन, हमारी शान और मान है,
जिसकी सीमा पर होती, मजबूत पहचान है।

पत्थरों को काट कर, सड़कों का निर्माण करते हैं
अपनी हिम्मत और मेहनत से, हर सपने को साकार करते हैं।
जहां बाधाएं हों, वहां नए रास्ते बनाते हैं,
बीआरओ के योद्धा, हर कठिनाई को हराते हैं।

धूल भरी राहों पर, जो संघर्ष का रास्ता बनाते हैं,
सीमा के रक्षक, जो जीवन का हर पल निभाते हैं।
बॉर्डर रोड ऑर्गेनाइजेशन, अपनी सड़कों को बनाते हैं,
पहाड़ों की ऊँचाइयों में, नए रास्ते दिखाते हैं।

सर्दियों की ठंडक हो या गर्मियों की तपिश,
हर मौसम में, ये दिलों की उम्मीद जगाते हैं।
पुलों को जोड़ते, वो दो किनारों को मिलाते हैं,
हर बाधा को पार कर, रास्तों को संवारते हैं।

सीमा के रखवाले, जो अपना काम ईमानदारी से निभाते हैं.
रात–दिन की मेहनत से, अपनी धाक जमाते हैं।
हर पुल–पुलिया–सड़क–नाले, उनके समर्पण की निशानी हैं,
बीआरओ का हर योद्धा, भारत की जान है,
बॉर्डर रोड ऑर्गेनाइजेशन भारत की शान है.........

☆☆☆☆

श्री सुमन कुमार, प्रारूपकार, मुख्यालय
मुख्य अभियन्ता स्वास्तिक परियोजना

दांपत्य जीवन कोमलता एवं प्रगाढ़ प्रेम से परिपूर्ण है।

सीमा सड़क संगठन का काम

सीमा सड़क संगठन है भारत देश की शान..
सीमा सड़क संगठन है भारत देश की शान
जहाँ न पहुँचे गाड़ी–घोड़ा न कोई सामान..
वहाँ पहुँचे बीआरओ के बहादुर जवान
जो करते हैं दिन–रात काम बिना किए विश्राम..

जिसको यह पता न हो कि क्या है बीआरओ का काम..
वह ऊँचे पर्वतों पर सड़कों को देख के लगा ले यह अनुमान..
कि पहाड़ों की छाती चीरकर सड़क बनाना है हमारा काम..
क्योंकि हम है बीआरओ के जवान
जो करते हैं दिन–रात काम बिना किए विश्राम..

एक गाँव को दूसरे गाँव से जोड़ना..
एक शहर को दूसरे शहर से जोड़ना..
एक देश को दूसरे देश से जोड़ना..
इसी से है हमारी पहचान...
क्योंकि हम हैं बीआरओ के बहादुर जवान..
जो करते हैं दिन–रात काम बिना किए विश्राम..

☆☆☆☆

श्री सुमित कुमार, प्रवर श्रेणी लिपिक,
मु० 46 (स्व.) कृतिक बल, हीरक परियोजना

मेरा BRO महान है

सबसे बढ़कर शक्ति समय की, आज हमारे पास है।
हमें अपने मेहनत से लिखना, BRO का इतिहास है।

मेरा बी आर ओ महान है।
किसने कहा यह सब रैन बसेरा है।
मेरे देश की शान है, BRO हम सब का अभिमान है।
मेरा बी आर ओ महान है।

जाति–पाति, ऊंच–नीच का भेद नहीं,
सब मिलकर एक साथ रहते हैं।
हमें कर्मठ बन लिखना, आज नया इतिहास है।
मेरा बी आर ओ महान है।

बर्फीले तूफानों से टकराते हैं,
सुन्दर सड़कों का जाल बिछाते हैं, पथ में पावन धार है,
हम सब के हाथों में हिम्मत का हथियार है।
मेरा BRO महान है।
DG साहब के सपनों का BRO
लिख रहा आज का इतिहास है।
मेरा BRO महान है।

☆☆☆☆

श्री एम.के. पाण्डेय, मार्गदर्शक मुख्यालय सी. स. म.,

जिस देश को अपनी भाषा और अपने साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता।

– देशरत्न डॉ. राजेन्द्रप्रसाद

सच्चा प्रेम दुर्लभ है, सच्ची मित्रता और भी दुर्लभ है।

आइए लेह चलें

लद्दाख की राजधानी लेह अपनी अद्वितीय प्राकृतिक सुंदरता, सांस्कृतिक विरासत और रोमांचक अनुभवों के लिए विश्व प्रसिद्ध है। यहाँ की यात्रा हर यात्री के लिए एक अविस्मरणीय अनुभव होती है, परंतु सही समय और सही योजना, इस यात्रा को और अधिक रोमांचक और मजेदार बना सकती है। तो आइए, जानें यहाँ की यात्रा से संबंधित कुछ महत्वपूर्ण तथ्य–

यात्रा की योजना :

लेह की यात्रा की शुरुआत से पहले, मौसम और मार्ग की जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है। गर्मियों (मई से सितंबर) के दौरान यहाँ का मौसम सुहावना होता है, जो यात्रा के लिए सर्वोत्तम समय है। सर्दियों में तापमान अत्यंत कम हो जाता है, जिससे यात्रा कठिन हो सकती है।

पहुँचने के मार्ग

लेह पहुँचने के दो प्रमुख मार्ग हैं :–

सड़क मार्ग – मनाली–लेह और श्रीनगर–लेह राजमार्ग लोकप्रिय हैं। मनाली–लेह मार्ग पर रोहतांग दर्रा, बारालाचा ला, लाचुंग ला, और तंगलंग ला जैसे उच्च पर्वतीय दर्रे आते हैं, जो यात्रा को रोमांचक बनाते हैं। श्रीनगर–लेह मार्ग पर जोजिला दर्रा और कारगिल जैसे स्थान आते हैं।

वायुमार्ग – लेह का कुशोक बकुला रिम्पोचे हवाई अड्डा देश के प्रमुख शहरों से जुड़ा है। हवाई यात्रा समय की बचत करती है, लेकिन सड़क मार्ग से यात्रा करने का अपना अलग ही रोमांच है।

स्थानीय आकर्षण:

लेह और उसके आसपास कई दर्शनीय स्थल हैं:

(i) लेह पैलेस – 17वीं सदी में बना यह महल तिब्बती वास्तुकला का उत्कृष्ट उदाहरण है।

(ii) शांति स्तूप – यह सफेद गुंबद वाला स्तूप लेह शहर का सुंदर दृश्य प्रस्तुत करता है।

(iii) थिक्से मठ – यह मठ तिब्बती बौद्ध धर्म का प्रमुख केंद्र है, जहाँ 15 मीटर ऊँची मैत्रेय बुद्ध की मूर्ति स्थित है।

(iv) मैग्नेटिक हिल – यहाँ गाड़ियों को बिना इंजन की सहायता से चलते हुए देखा जा सकता है, जो एक अद्भुत अनुभव है।

(v) पैंगोंगत्सो झील – यह खारे पानी की झील अपनी बदलती रंगत और प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है।

(vi) नुब्रा घाटी – यहाँ के रेत के टीले और दो कूबड़ वाले ऊँट पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र हैं।

सावधानियाँ

लेह की ऊँचाई लगभग 11,500 फीट होने के कारण कुछ यात्रियों को ऊँचाई संबंधी समस्याएँ हो सकती हैं। इससे बचने के लिए पहले दिन आराम करें, पर्याप्त पानी पिएँ, और भारी शारीरिक गतिविधियों से बचें। स्थानीय मौसम के अनुसार गर्म कपड़े साथ रखें, क्योंकि दिन और रात में तापमान काफी बदलता है।

निष्कर्ष

लेह की यात्रा न केवल प्राकृतिक सुंदरता का आनंद लेने का अवसर प्रदान करती है, बल्कि यहाँ की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और रोमांचक गतिविधियाँ भी यात्रियों को आकर्षित करती हैं। यह यात्रा जीवनभर की स्मृतियों को संजोने योग्य अनुभवों से भरपूर होती है।

☆☆☆☆

श्री परवेज़ शाह, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी, मुख्यालय मुख्य अभियंता, हिमांक परियोजना

उच्च ऊँचाई वाले क्षेत्रों में तैनात सीमा सड़क संगठन के कर्मचारी का जीवन एवं कार्य शैली

सीमा सड़क संगठन भारतीय सेना और नागरिकों के लिए अहम सड़कें बनाने और उनका रख–रखाव करने वाला एक महत्वपूर्ण संगठन है। खासतौर पर हम जिन क्षेत्रों में काम करते हैं, वे उच्च पर्वतीय इलाकों में होते हैं, जहां का जीवन बेहद चुनौतीपूर्ण होता है। मैं सीमा सड़क संगठन के कर्मचारी के रूप में उच्च ऊँचाई वाले क्षेत्रों में तैनात हूँ, और आज इस लेख में, मैं आपसे अपनी इस कठिन लेकिन गौरवपूर्ण यात्रा के बारे में बात करना चाहता हूँ।

उच्च ऊँचाई पर काम करने की चुनौतियाँ

जब हम उच्च ऊँचाई पर सड़क बनाने उनकी और मरम्मत करने का काम करते हैं तो यह किसी सामान्य कार्य से कहीं ज्यादा कठिन होता है। समुद्रतल से 12,000 फीट या उससे भी ऊपर की ऊँचाई पर काम करते समय हमें न केवल शारीरिक रूप से बल्कि मानसिक रूप से भी मजबूत होना पड़ता है। यहां मैं सामने आने वाली कुछ चुनौतियों को आपसे साझा करना चाहता हूं:

(क) ऑक्सीजन की कमी :– उच्च ऊँचाई पर ऑक्सीजन की मात्रा कम हो जाती है, जिससे सांस लेने में कठिनाई होती है। जब आप 12,000 फीट या उससे ऊपर की ऊँचाई पर होते हैं, तो शरीर को पर्याप्त ऑक्सीजन मिल पाना मुश्किल हो जाता है। यह स्थिति हमारी कार्य क्षमता को प्रभावित करती है। ऐसे में हम अपनी शारीरिक स्थिति पर हमेशा ध्यान रखते हुए अदम्य साहस के साथ काम करते हैं।

(ख) कठिन जलवायु :– पर्वतीय क्षेत्रों में मौसम कभी भी बदल सकता है। भारी बर्फबारी और तेज हवाएं हमारी दिनचर्या को चुनौतीपूर्ण बना देती हैं। काम करते वक्त हमें अक्सर बर्फ से ढके रास्तों को खोलना होता है, जिससे हर कदम पर खतरा बना रहता है। उच्च ऊँचाई वाले इलाकों में तापमान प्रायः शून्य से नीचे ही रहता है, जिससे शरीर का तापमान बनाए रखना मुश्किल हो जाता है। फिर भी हम इन मुश्किलों का सामना करते हुए अपने कार्य का निर्वहन पूरी कर्तव्य–निष्ठा से करते हैं।

(ग) मानसिक और शारीरिक थकान :– उच्च ऊँचाई पर शारीरिक थकान जल्दी महसूस होती है, क्योंकि शरीर को कम ऑक्सीजन में कार्य करना पड़ता है जिससे मानसिक थकान भी बढ़ जाती है। क्योंकि यह क्षेत्र बेहद एकाकी होते हैं और हम अपने परिवार से दूर होते हैं, लंबे समय तक अकेले रहना और कठिन परिस्थितियों में काम करना मानसिक रूप से भी थकाने वाला होता है। लेकिन, इकाई में आपसी सहयोग और एक दूसरे की मदद से हम इन समस्याओं पर विजय पाते हैं और अपने कार्यों को पूरा करते हैं।

काम का महत्व और संतुष्टि

हालांकि यहां काम करना कठिन है, लेकिन यह बेहद संतुष्टिदायक भी होता है। जब मैं देखता हूं कि हमारे द्वारा बनाई गई सड़कों से भारतीय सेना और नागरिकों को सुविधा मिल रही है, तो मुझे सीमा सड़क संगठन का कर्मचारी होने पर गर्व होता है। इन सड़कों से सैनिकों को अपने तैनाती स्थल तक पहुंचने में मदद मिलती है, साथ ही पर्यटकों और स्थानीय नागरिकों को यात्रा एवं व्यापार करने में आसानी होती है। यह सोचकर एक अलग ही खुशी मिलती है कि मैं इस देश की सेवा में अपनी भूमिका निभा रहा हूँ।

पाप और अधर्म की जड़ लोभ है।

सहयोग–भावना और भाईचारा :– उच्च तुंगता इलाके में काम करते हुए हम सभी में मजबूत सहयोग–भावना होती है। यहां सभी कर्मचारी एक दूसरे की मदद करते हैं और एक दूसरे के साथ रहते हुए मुश्किल समय का सामना करते हैं। हम सब मिलकर अपने लक्ष्य को पूरा करने के लिए काम करते हैं। हमारी सबसे बड़ी ताकत हमारी इकाई होती है, क्योंकि एकजुट होकर हम किसी भी चुनौती का सामना कर सकते हैं।

सीमा सड़क संगठन के कर्मचारी के रूप में उच्च ऊँचाई वाले क्षेत्रों में काम करना एक कठिन, लेकिन गर्व का अनुभव है। यह एक ऐसी यात्रा है जो न केवल शारीरिक बल बल्कि मानसिक दृढ़ता की भी परीक्षा लेती है। हम अपनी जान की परवाह किए बिना, देश की सुरक्षा और विकास के लिए काम करते हैं। हमारी मेहनत और संघर्ष का परिणाम भारतीय सेना और नागरिकों के लिए मजबूत और सुरक्षित सड़क नेटवर्क के रूप में सामने आता है। हर कठिनाई के बावजूद, हम अपने कर्तव्यों का पालन करने के लिए तत्पर रहते हैं, क्योंकि यह हमारे देश की सेवा है, और इससे बड़ी कोई बात नहीं हो सकती।

☆☆☆☆

श्री सतीश कुमार, उच्च श्रेणी लिपिक, 80 स.नि. इकाई / 755 कृतिक बल

दंतक दिल है हिंदुस्तान का

यह कार्य क्षेत्र देह है भूटान का
इसमें दंतक दिल है हिंदुस्तान का
धड़कता है दिल तो चलती है देह
मित्र है यह सच्चा, भारत महान का।

दंतक वह दरवाजा है भूटान की प्रगति का
नया दौर दिया है जिसने वाहनों को गति का
मोल बढ़ा दिया है इसने भूटान की संपत्ति का
यह सब फल है प्यारे भारत महान की संगति का
रखते हैं दोनों पूरा ख्याल एक दूसरे के सम्मान का
इस में दंतक दिल है हिंदुस्तान का।

चारों दिशा भूटान ने, सड़कों का जाल बिछाया
पारो हवाई अड्डे से सब देशों का संपर्क बनाया
अनेकों बिजली परियोजनाओं से घर घर में दीप जलाया
सुख दुख में इस देश के, दंतक ही काम है आया
इसको पथ पर लाने में बहा खून-पसीना हमारे हर जवान का
इस में दंतक दिल है हिंदुस्तान का।

जिसका यह दिल है वह भारत है दिलवाला
अपने घर अभी अंधेरा सही, पर पड़ोसी के घर हो उजाला
हर सरहद पर ऊँचा लहराये अमन का तिरंगा निराला
जो हो अमन का दुश्मन कोई, उसका मुँह काला
दोस्तों का वफादार है भारत, पर पक्का दुश्मन है शैतान का
इस में दंतक दिल है हिंदुस्तान का।

दंतक के काम को सभी यहाँ सराहते हैं
राजा के आदेशों में भी दंतक के चर्चे आते हैं
भारत के सभी कर्मचारी यहाँ, भारत के दूत कहलाते हैं
15 अगस्त हो या 26 जनवरी, तिरंगा मिल कर लहराते हैं
यहाँ के निवासी भी निभाते हैं दायित्व पुरानी पहचान का
इस में दंतक दिल है हिंदुस्तान का।

☆☆☆☆

श्री रमेश चंदर, पूर्व निजी सचिव

जहाँ बुद्धि शासन करती है, वहाँ शांति में वृद्धि होती है।

''कल हो न हो''

''भविष्य का अर्थ ही है अनिश्चितता। कल क्या होगा, कोई नहीं जानता, यदि भविष्य अनिश्चित न होता तो कुछ भी करने का महत्व न होता। ऐसा–ऐसा ही होगा, यदि इस बात की पुष्टि पूर्व में ही हो जाती तो हाहाकार मच जाता, क्योंकि लोग पूर्व निश्चित फल को धारण कर सब कुछ करने को उद्धृत हो जाते, यहां तक कि निश्चितता पर ही आघात करने लगते। समय का भय मनुष्य को उचित मार्ग की ओर प्रेरित करता है। कल का सबेरा मिल पायेगा अथवा नहीं, इसकी पुष्टि कोई नहीं कर सकता। फिर ज्ञान–विज्ञान का क्या लाभ? लेकिन ज्ञान का लाभ तब आवश्यक है जब यह पूरी तरह समय से समझ में आ जाये कि वर्तमान काल का किस प्रकार सर्वोत्तम उपयोग हो। विज्ञान का लाभ तभी सार्थक है, जब वह समय के सदुपयोग में सहायक सिद्ध हो सके। जो समय आज और अभी हमें निर्भयता प्रदान कर रहा है, हमारा संरक्षण कर रहा है, सबको वरदान दे रहा है–उसको गले लगाकर स्वीकार तो कर लें।

हर क्षण अधिक से अधिक जीने की चाह उसी प्राणी में हो सकती है जो धर्म मार्ग पर अडिग है। अन्यथा एक न एक दिन ऐसा क्षण अवश्य आयेगा जब जीने की चाह समाप्त हो जायेगी। अच्छा काम, नैतिक कार्य, धर्म–कर्म आज ही पूर्ण कर लिया जाना चाहिए, उन्हें कल पर न टाला जाये। नीति सम्मत सभी विषय बिना समय गंवाए, अभी तुरंत आरंभ किया जाना शुभ है। सभी शुभ कार्यों के लिए तात्कालिक क्षणों को सुअवसर कहा जाता है। जितना शीघ्र हो सके, शुभ कार्य संपन्न हो जाने चाहिये। मानव को अपने जीवन के प्रत्येक क्षण का सदुपयोग करना सबसे बड़ा पुण्य है। कोई भी क्षण निरर्थक न जाने पाये। जीवन एक ऐसी परीक्षा की भांति है, जिसका समय निर्धारित नहीं है। इसलिए श्रेष्ठ परीक्षार्थी की भांति सबसे कम समय में सभी प्रश्नों का हल प्रस्तुत करना श्रेयस्कर है अन्यथा समय को व्यर्थ करने से असफलता भली। असफलता से मनुष्य बहुत कुछ सीखता है, इससे लोग यह भी सीखते हैं कि समय को व्यर्थ करने से असफलता मिलती है और समय के सदुपयोग से सफलता सुनिश्चित होती है। समय की भूमिका सर्वोपरि है। इसमें प्रमाद, शिथिलता, आलस्य, उपेक्षा, रूकावट, तथा दिशाभ्रम का स्थान नहीं है।

आज का दायित्व आज ही पूरा करने में ही हित है। यह दायित्व क्या है? इसे बार–बार समझने और जीने की आवश्यकता है। ''कल हो न हो'' इसका कोई भरोसा नहीं। जीवन एक ऐसा उपहार है, जिसका लाभ पाने के लिए कम से कम समय की सुविधा प्रदान की गयी है। विलंब होने पर हित तिरोहित हो जाते हैं। अपने कर्तव्यों का निर्वहन यथाशीघ्र हो। कल पर कोई सत्कर्म छोड़ देना बहुत बड़ी भूल मानना चाहिए, ''कल तो धोखा है''। जीवन का स्पंदन आज और अभी में विद्यमान है, कल में कभी नहीं।

☆☆☆☆

श्री धीरेन्द्र कुमार, प्रवर श्रेणी लिपिक, मुख्यालय 755 सीमा सड़क कृतिक बल

हृदय की कोई भाषा नहीं है, हृदय–हृदय से बातचीत करता है।

– महात्मा गांधी।

बिना श्रम के सुख नहीं मिलता।

राष्ट्र के विकास में सीमा सड़क संगठन का योगदान

07 मई 1960, स्वर्णिम इतिहास की वह सुनहरी तारीख जब भारत में एक नए संगठन का अभ्युदय हुआ, जिसे नाम दिया गया सीमा सड़क संगठन और कालांतर में इसे सामान्य आरक्षित अभियंता बल 'ग्रेफ' के नाम से एक नई पहचान मिली।

जब संगठन की स्थापना की गई तो इसका मूल उद्देश्य भारत के सीमावर्ती क्षेत्रों में सेना को सुगमता से पहुँचाने और दुर्गम क्षेत्र के बुनियादी ढांचों का विकास करना था, लेकिन समय के साथ इसकी कार्य कुशलता और कार्य क्षेत्र का दायरा भी बढ़ता गया और आज यह संगठन राष्ट्र के स्तंभ के रूप में देश का सम्मानित संगठन है। सीमा सड़क संगठन द्वारा बनाई गई सड़कें न केवल सेना के लिए सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि नागरिक जीवन को बेहतर और एक नया आयाम देती हैं।

सात बहनों (Seven Sisters) के नाम से विख्यात उत्तर–पूर्वी राज्यों के दुर्गम क्षेत्रों में बेहतर सड़कों के माध्यम से आज तीव्र गति से आर्थिक गतिविधियां बढ़ रही हैं। लेह लद्दाख जैसे प्राकृतिक चुनौतियों से जूझने वाले केंद्र शासित क्षेत्र को अपनी कुर्बानियों से सींचकर वहां व्यापार पर्यटन और रोजगार के नए अवसर पैदा कर रहे हैं। संगठन द्वारा निर्मित सड़कों, सुरंगों और पुलों के कारण सीमावर्ती गांवों तक स्वास्थ्य, शिक्षा और अन्य बुनियादी सेवाओं की पहुंच हो पाई है। ये सड़कें, सुरंगें और पुल कितने गुमनाम शहीदों की कुर्बानियों से बने हैं, यह संगठन से जुड़े जवान से बेहतर कोई नहीं समझ सकता है। संगठन राष्ट्रीय सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हाल ही में हुए भारत चीन सीमा विवाद ने सीमा सड़क संगठन की महत्वपूर्ण भूमिका को उजागर किया। लद्दाख और अन्य सीमावर्ती सुदूर क्षेत्रों में सड़कों का तेजी से विकास भारत को अपनी सीमाओं पर मजबूत स्थिति बनाए रखने और संभावित खतरों का शीघ्रता से जवाब देने में सक्षम बनाता है।

संगठन की परियोजनाएं, स्थानीय लोगों को रोजगार के अवसर भी प्रदान करती हैं। सड़क निर्माण परियोजना में स्थानीय मजदूरों और कुशल कारीगरों को काम करने का मौका मिलता है जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को लाभ मिलता है और इन क्षेत्रों का समग्र विकास होता है।

संगठन के सामने सबसे बड़ी चुनौती दुर्गम और कठिन भौगोलिक क्षेत्र में काम करना है, जहां मौसम की मार और प्राकृतिक आपदाएं अक्सर निर्माण कार्य को प्रभावित करती हैं। बर्फबारी, भूस्खलन और अन्य प्राकृतिक बाधाएं संगठन के कार्य को प्रभावित करती हैं, लेकिन संगठन के जवानों की कार्य कुशलता और देश के प्रति प्यार, इन चुनौतियों से लड़ने का जुनून पैदा करता है।

अतः कह सकते हैं कि सीमा सड़क संगठन केवल सड़कें बनाने वाला संगठन नहीं बल्कि भारत के सीमावर्ती क्षेत्रों के विकास सुरक्षा और आर्थिक उन्नति का महत्वपूर्ण स्तंभ है।

इसके परिश्रम और कुर्बानियों ने देश के दुर्गम क्षेत्रों को मुख्य धारा से जोड़ने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

☆☆☆☆

श्री राकेश शर्मा, कारपेंटर, पूर्वी आधार कर्मशाला (ग्रेफ)

हिंदी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।
— स्वामी दयानंद।

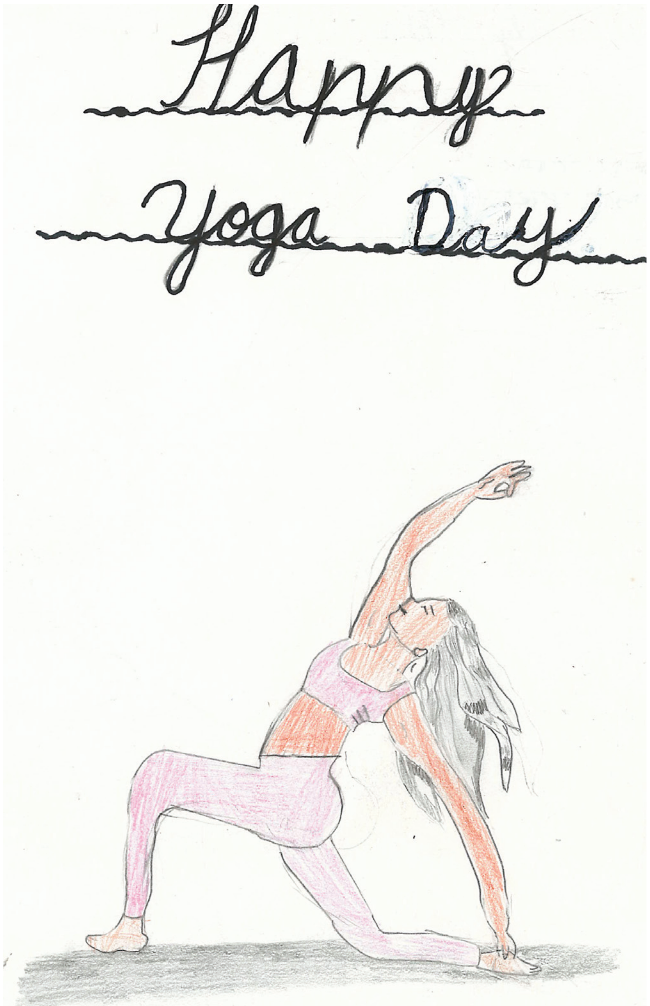

क्रिस्टी एक्का, कक्षा 4, सुपुत्री जार्ज वाल्टर एक्का, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी, सी.स.म.

Leki Yangjum Khochulu,
D/o Passang Tsering Khochulu,
Age 10 Years,
Class : IV

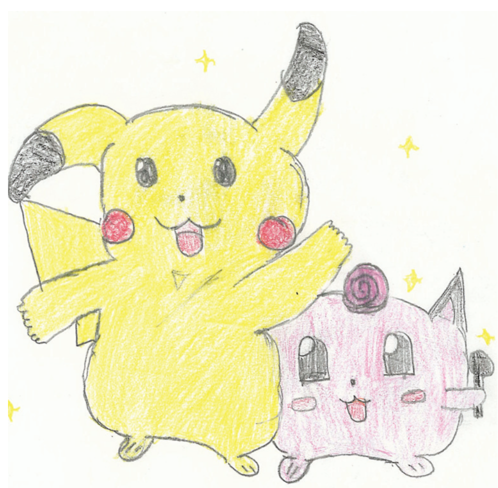

Alubunu Moriju,
S/o Krashi Moriju
Age 09 Years,
Class : IV

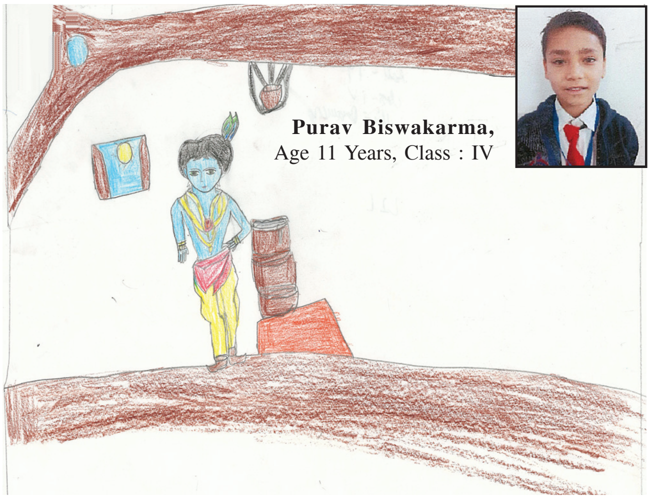

Purav Biswakarma,
Age 11 Years, Class : IV

Ane Tai Taki,
S/o Fecha Taki
Age 10 Years, Class : V

Khusbu Kumari,
D/o Umesh Prasad
Age 11 Years, Class : V

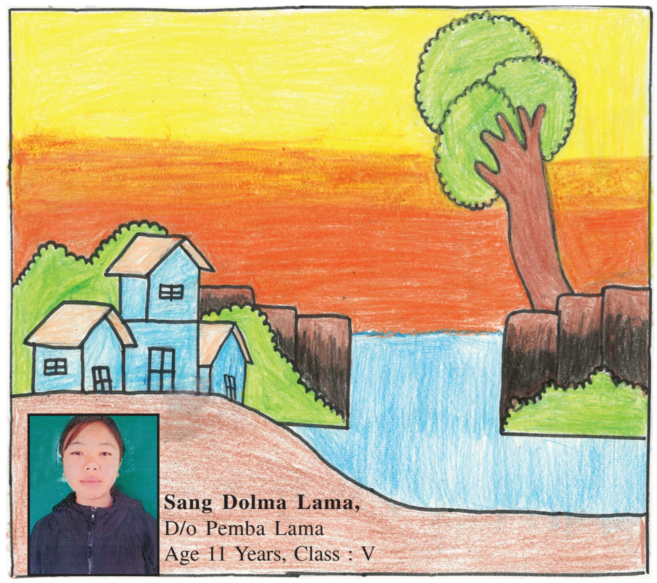

Sang Dolma Lama,
D/o Pemba Lama
Age 11 Years, Class : V

Choizem Dolma,
D/o Tashi Dorjee
Age 11 Years, Class : V

जिंदगी एक कसौटी है, जिस पर ईश्वर हमें कसता है।

M/s RCC Developers Limited

An ISO 9001:2008 Certified Company

Branch Office: 109, Citi Centre
Bachcha Park, Meerut, Uttar Pradesh
Email Id :- rccd109@hotmail.com

With Best Compliments From

THERMOTECH ENGINEERS

IMPORTERS & CONTRACTORS

HEATING VENTILATION AND AIR CONDITIONING SYSTEM

OFFICE: 90-91, LAKE CITY PLAZA, KARAN NAGAR,
SHRINAGAR -190010 TEL NO: +91-194-2485001, 7006571699

WORKS: PLOT NO. 173, SIDCO INDUSTRIAL ESTATE,
RANGRETH BUDGAM 190007

E-Mail thermtechengineers@yahoo.com

विद्वत्ता, चतुराई और बुद्धिमानी की बात यही है कि मनुष्य अपनी आय से कम व्यय करे।

With Best Compliments From

YR INTERNATIONAL

Authorised Dealer :

CAT Air tools, DRILLTECH Drilling Accessories, GMT Drill Rods, Deals in :

Hardware , Electricals, Building Materials, Road Construction Materials Road Furniture, Safety Item & General Order Suppliers

(M)+91-97350-21311

Email : yashag20@gmail.com

ADDRESS : MADAN TRADING BUILDING, SEVOKE ROAD, SILIGURI-734001

M/S HARYANA ENTERPRISE

Deals in :

TMT Steel, Hardware, Electrical, Sanitary, Furniture, Paints & Other Construction Materials.

Address:

Old Bata Road, Mahabirsthan, Siliguri

West Bengal- 734004

Email: haryanaenterprise.slg@gmail.com

Contact: 8900409955 (Govind Dalmia)

PROUD TO BE ASSOCIATED WITH

BRO

QUALITY, COMMITMENT & CONFIDENCE

आत्मप्रशंसा आत्मदाह है और दूसरे की निंदा भी वैसी ही है।

9434060601 (ALOK)

ATUL AGENCIES

GOVT. APPROVED ARMY CONTRACTOR AND GENERAL ORDER SUPPLIER

SPECIALIST IN CAT B and CPL STORES

NCH BUILDING, 14 CHURCH ROAD, SILIGURI

GSTIN NO : 01ATGPS3539M1ZF
Trade Mark : EFFESS

8899754669-9419069134
miripiritraders107@gmail.com
https://www.miripiriengineersandmanufacturers.com/

M/s Miri Piri Engineers & Manufacturers

Manufacturers of Pre Fabricated Shelters, Huts, Steel Furnitures,Steel Doors,Window Frames,Angle Iron Post,Steel Towers,Wire Creates, Barabed Wire, Road Furniture & Guardrail For Highway.

Phase-II,Lane3,Industrial Area,SIDCO,Bari Brahmana, Samba Jammu-181133 (J&k)

ISO9001 ISO14001 ISO45001 ISO45001 RoHS compliant MSME GeM Government e Marketplace

जिसे सब तरह से संतोष है, वही धनवान् है।

"With Best Compliments"

M/s. EPICON

Construction Pvt. Ltd

A-236, 3rd Floor,
Chattarpur Enclave,
Phase II
Chattarpur, New
Delhi-110074

With Best Compliments From
M/S. KARCHEN LACHUNGPA
You Demand
We Deliver
LOWER SICHEY NEAR FOREST CHECK POST GANGTOK EAST SIKKIM
sskganden123@gmail.com
gkrofficial01@gmail.com

With Best Compliments From

DS SALES PVT LTD

DS SALES PVT LTD

Beas Public School, 1, kullu Bypass, Dhalpur, Kullu H.P.175101

Registered Contractor & Supplier

BRO, NHAI, NHPC, PWD, BBMB, SJVN

Deals In:

General Suppliers, SMP ROCK DRILLER, Constructions Machinery, Earth Moving Equipment's, Sandvik Rock Tools And Lubricants.

Tel:- 94180-01200, 98572-00016, 90154-28377
Email Id:- dspl9149@gmail.com

With Best Compliments From

M/S RAJA

CONSTRUCTION COMPANY

GOVERNMENT CONTRACTOR & GENERAL ORDER SUPPLIERS

"AA" CLASS PWD (RAJ) & BRO CONTRACTOR

ADDRESS

A-164, KARNI NAGAR,
OPP HOTEL KARNIBHAWAN
BIKANER (RAJ)
Mob No. 9928886642 & 9414264657

GSTIN : 08AAGFR7273NIZH

E-mail : rajacont.bkn@gmail.com

With Best Compliments From

SHREE KARNI
TRADERS

"AA" CLASS PWD (RAJ) & BRO CONTRACTOR

ADDRESS

C-171, KANTA KHATURIA COLONY,
BIKANER (RAJ) 334003
Mob No. 09829071094 & 09413388742

GSTIN : 08AAVFS2879J1Z7

E-mail: srikarnitraders@gmail.com

With
Best Compliments
From

With Best Compliments From

Aqua Engineers & Fabricators

Having its office & factory location at Khonmoh Industrial Area, Srinagar, J&K. Deals in the fabrication of Pre-Fabricated Shelters, Steel Trusses, Shuttering Plates, Steel Tanks, Hot water boilers, Mild Steel Tubular Poles etc. Manufacturing of Road sign Boards, Overhead Gantries, Road furniture & traffic Safety Systems.

Working mainly with Border Roads Organization, Military Engineering Services,14 Corps, 15 Corps,16 Corps,NHAI, NHPC, HCC & several other Defence, Govt. & Semi Govt. departments. Also we are the sole distributors of 3M India Limited for Traffic Safety System Products.

Having its own convenience (Tata 207, Hydra cranes, Tippers, etc.) for the transportation of structures at various construction sites. Having our staff strength of more than 20 Employees including Engineers & Fabricators

Regards

Aqua Engineers & Fabricators
117 Industrial Estate Phase III
Khonmoh Srinagar J&K-191101
Cell: +91 9797794180, 9419424038

ISO-9001:2015

CIN U45203AS1999PLC005740

BIPL

BHARTIA INFRA PROJECTS LTD.

ENGINEERS AND CONTRACTORS

201 Royal Arcade, Dr. B. Baruah Road, Ulubari, Guwahati-781007

Phone: +91-361-2468523, Fax: +91-361-2466693, E-mail: info@bhartiainfra.com, website: www.bhartiainfra.com

With Best Compliments From

GANPATI BHARAT

Corporate Office:

Fourth Floor, Pearl Dewan, S-14, Mangal Marg,
Bapu Nagar, Jaipur. Rajasthan - 302015 JAIPUR

Registered Office:

12 Bhardwaj Colony, Sri Ganganagar-335001 (Raj.)

Road/Street: PO & PS LUMLA
Locality/Sub Locality: ZEMITHANG
City/Town/Village: Khobleteng
District: Tawang
State: Arunachal Pradesh

Phone No--+919402041346

गृहस्थाश्रम परम पवित्र है, तीर्थ के समान है और सब धर्मों का मूल है।

With Best Compliments From

S.S. Infrazone Pvt. Ltd.

S.S Infrazone Pvt. Ltd

KN-312SA-312min, Aurangabad Jageer, Amar Shaheed Path, Lucknow 226022

Email Id :- ssinfrapvtltd@outlook.com

With Best Compliments From

GSTIN : 01CTPPK6200G1Z1

MOB :- 9906904155

ANG SANG ENTERPRISES

95,LANE NO 10, GREATER KAILASH, JAMMU 180011

Deal with:- Hardware Items, Electric Goods & General Orders Supply.

With Best Compliments From

GRRB

M/s. GRRB ASSOCIATES

ENGINEERS AND CONTRACTORS

Holding No. 06/623, Gyan Villa, Manav Kalyan Road,
Opp. Brahma Kumari Ashram Lane, Tinsukia 786125, Assam.

Cell. :- +91 8811092714
Website: www.grrb.in
Email:- info@grrb.in

सकारात्मक विचार मनुष्य की शक्ति बढ़ाते हैं।

BORDER ROADS ORGANISATION
NECHIPHU TUNNEL
DHORAJIA CO

सीमा सड़क संगठन